हँसती दुनिया

₹ 15/-

★ वर्ष 46 ★ अंक 11

★ नवम्बर 2019

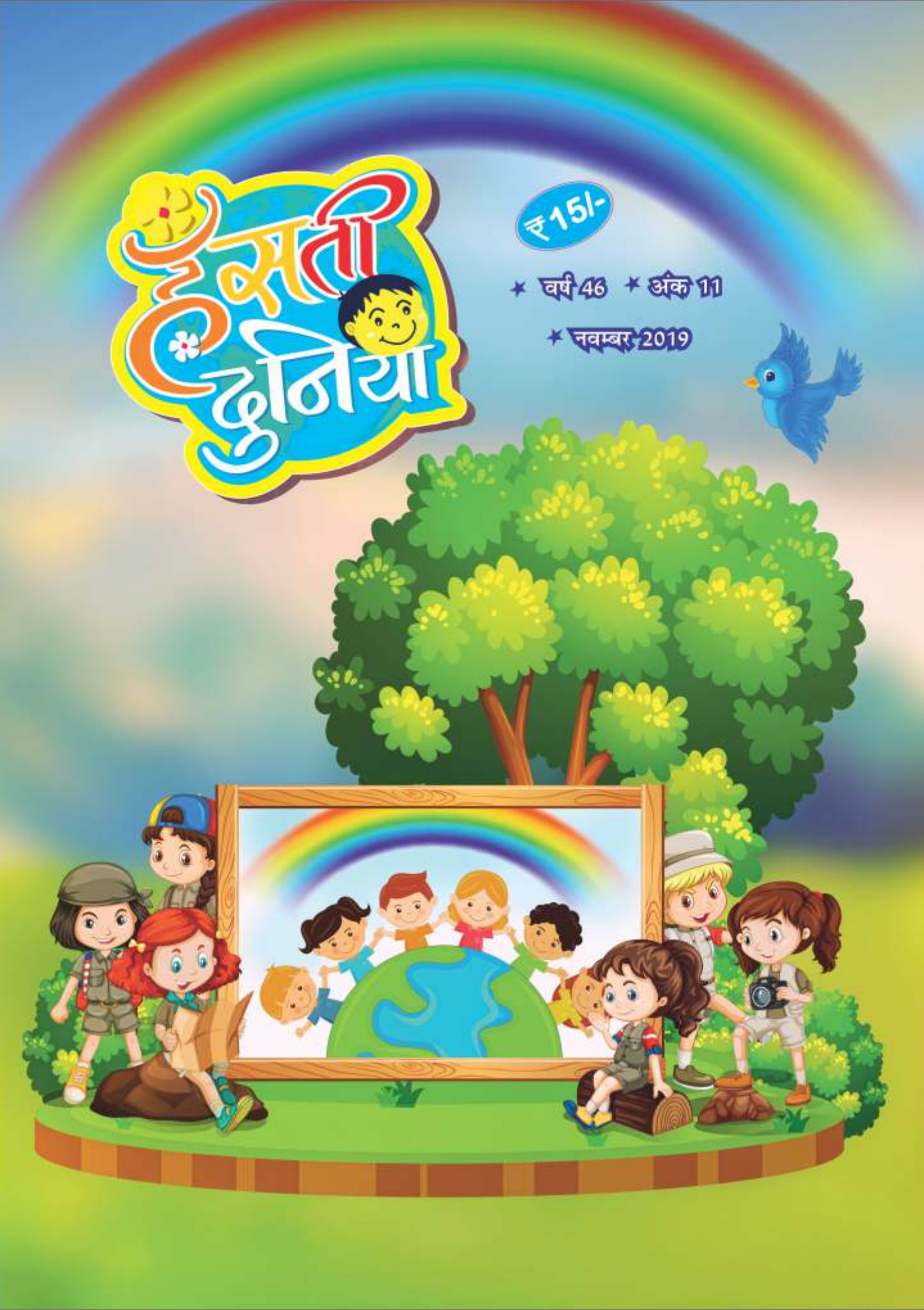

हँसती दुनिया

• वर्ष 46 • अंक 11 • नवम्बर 2019 • पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : सी. एल. गुलाटी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरकारी कालोनी,
दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक — **विमलेश आहूजा**
सहायक सम्पादक — **सुभाष चन्द्र**

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	$25	$70	$120	$250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$30	$85	$140	$300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
16. समाचार
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

विशेष/लेख

6. बाबा हरदेव सिंह जी के दिव्य वचन
7. सद्गुरु माता सुदीक्षा जी के दिव्य वचन
8. तो फिर क्या
   : सी. एल. गुलाटी
18. अद्भुत समुद्री जगत
   : ऋषि मोहन श्रीवास्तव
24. केला सबको है पसन्द
   : डॉ. विद्या प्रकाश
27. जल से स्वास्थ्य
   : डॉ. विद्या श्रीवास्तव
28. सबसे ऊँचा रेल पुल
   : किरण बाला
30. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
   : घमंडीलाल अग्रवाल

कहानियां

9. चीकू-मीकू और चुनचुन
   : हरजीत निषाद
20. ईनाम का हकदार
   : राजकुमार जैन 'राजन'
25. नियमित पढ़ाई
   : ओ. पी. राजकुमार
31. खेत की रखवाली
   : मोहम्मद फहीम
39. अब बोलो
   : डॉ. दर्शन सिंह 'आश्ट'
46. माँ के तीन अनोखे गहने
   : अर्जुन क्वात्रा
47. पैसों की बर्बादी पसन्द नहीं
   : ऋषि मोहन श्रीवास्तव
47. छाता, माया और पेड़
   : राधेलाल 'नवचक्र

कविताएं

11. सूरज पाना है
   : परशुराम शुक्ल
11. स्वस्थ दिवाली
   : डॉ. देशबन्धु शाहजहांपुरी
17. दो कविताएं
   : राजकुमार जैन 'राजन'
23. रंग-बिरंगी धरती
   : परशुराम शुक्ल
29. पढ़ो और लिखो
   : राधेलाल 'नवचक्र'
33. बुलबुल
   : मीनू सिंह
33. गौरैया
   : महेन्द्र कुमार,
   : ऋषि मोहन श्रीवास्तव
43. दो बाल कविताएं
   : कीर्ति श्रीवास्तव

कर्म ही पूजा है

हर व्यक्ति को जो वह चाहता है कभी मिल जाता है और कभी नहीं भी मिलता। विद्यार्थी भी मेहनत करते हैं और मनचाहा परीक्षा फल मिल भी जाता है और नहीं भी मिलता। इस तरह जीवन के अनेकों ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ जैसा हम चाहते हैं ठीक वैसा परिणाम नहीं मिलता। किसी को प्रणाम करते हैं उसका उत्तर मिले तो अच्छा लगता है और उसका उत्तर न मिलने पर व्याकुल भी हो जाते हैं। जहाँ प्रशंसा की अपेक्षा होती है वहाँ हमें आलोचना भी मिल सकती है। जब हम किसी के लिए उपकार की भावना से कार्य करते हैं, वहाँ भी कई बार निराशा मिल जाती है और वह हमें हतोत्साहित भी कर जाती है, परन्तु हमें विचार करना चाहिए कि कुछ ऐसी भी चीजे हैं जो हमें मिल जाती हैं पर दूसरों को नहीं मिल पाती हैं जैसे –

★ वर्षा जब हमारे खेत में फसल के समय होती है तो उसकी उपज बढ़ जाती है परन्तु किसी-किसी जगह वही वर्षा इतनी अधिक होती है कि पूरी की पूरी फसल बर्बाद कर देती है।

★ सड़कों पर हम निरन्तर चलते हैं। यातायात के साधनों का प्रयोग भी करते हैं और हम अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाते हैं परन्तु कुछ ऐसे भी होते हैं जो उसी सड़क, उसी यातायात में अपनी जान तक गंवा बैठते हैं।

★ कोई विद्यार्थी पढ़ाई में पूरी लगन एवं तल्लीनता से मेहनत करता है परन्तु फिर भी पढ़ाई उसे आशातीत सफलता नहीं दे पाती और संयोगवश उससे कम पढ़ने वाला विद्यार्थी सफलता प्राप्त कर लेता है।

★ कईयों के पास पढ़ाई एवं नौकरी की योग्यता अधिक होती है परन्तु उनसे कम योग्यता वाला नौकरी या पद को प्राप्त कर लेता है।

★ कई बार हम बीमार होते हैं, अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती होते हैं और ठीक होकर अपने कार्य करने के योग्य हो जाते हैं परन्तु किसी-किसी को उसी अस्पताल में, उसी बीमारी के इलाज के लिए भर्ती कराया जाता है परन्तु उसकी वह बीमारी ठीक नहीं हो पाती और जीवन को समाप्त कर देती है।

इस तरह अनेकों-अनेकों पहलुओं पर हम स्वत: ही विचार कर सकते हैं। हम सभी प्रभु से अपनी-अपनी ओर से अपने लिए सफलता, स्वास्थ्य, सौभाग्य, विजय, योग्यता, बुद्धि, प्रतिभा, क्षमता, शक्ति, दीर्घायु एवं विवेक इत्यादि की प्रार्थना करते रहते हैं। जिनको यह सब प्राप्त हो जाता है उसे वह अपनी सफलता या विजय मानने लगते हैं। यही विजय और सफलता अक्सर उनमें विवेक-बुद्धि को नीचे लाने लगती है क्योंकि उनमें इस सफलता का अभिमान-सा हो जाता है। अभिमान हमेशा पतन का कारण बनता है।

जिन्हें सफलता नहीं मिलती उन्हें यह कदापि नहीं सोचना चाहिए कि हमारे अन्दर योग्यता नहीं है या हम किसी भी तरह काबिल नहीं हैं क्योंकि हमारा अधिकार केवल कर्म पर ही होता है फल पर नहीं। कैसी भी स्थिति हो हम रूकें नहीं, अपने कर्म को अपना धर्म मानकर करते जाएं। अपने कर्म को ईमानदारी, समझदारी और पूरी शक्ति के साथ करना ही हमारा कर्तव्य है। कर्म करते-करते हम **'Work is Worship'** अर्थात् कर्म ही पूजा है मानकर करें। हम कर्म को अपना आदर्श लक्ष्य मानकर करें और जो भी फल मिले उसमें ही सन्तोष करें और आभार एवं आशीर्वाद से अपने जीवन को सफल मानें।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 213

रब ए सभ दे अंग संग वसदा जंगली जा के लैणा की।
शह रग तों नजदीक है वसदा हाकां मार के लैणा की।
सहज अवस्था विच मिल सकदा कष्ट उठा के लैणा की।
उधरों पुटणा एधर लाणा करम कमा के लैणा की।
वेद कतेब वी एहो कहन्दे सीस झुका के मिलदा ए।
कहे अवतार निरंकार नूं तक के दिल मुरझाया खिलदा ए।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि परमात्मा को दूर समझना इन्सान के मन का भ्रम है। इन्सान यही सोचता है कि परमात्मा निकट नहीं, कहीं बहुत दूर विराजमान है। इन्सान का यह भ्रम सद्गुरु की कृपा से प्रभु को अंग-संग जानकर दूर होता है। जब तक इस सर्वव्यापी प्रभु को देखा नहीं, इसे अंग-संग महसूस नहीं किया तब तक मानव के मन का भ्रम भी समाप्त नहीं होता और वह यही सोचता है कि परमात्मा उससे बहुत दूर है। जो प्रभु-परमात्मा कण-कण में मौजूद है, वह उसके समीप भी है लेकिन अपने मन की सोच के कारण प्रभु को पाने के लिए वह प्रायः घर-परिवार छोड़कर जंगलों-बियावानो में इसकी तलाश में भटकता फिरता है। कभी-कभी ऊँची-ऊँची आवाजें देकर इसे पास बुलाना चाहता है। जो प्रभु मानव के अन्तरमन में विराजमान है उसे दूर मानकर वह जगह-जगह इसे पुकारता है।

बाबा अवतार सिंह जी समझाते हैं कि दुनिया के इन्सानों, इस बात को समझो कि जब यह प्रभु अंग-संग रहता है तब इसकी खोज में जंगल जाकर क्या हासिल होना है। हमारे शरीर में सांस लेने की नली अर्थात् 'शह-रग' से भी जब यह नजदीक है तो इसे ऊँची आवाजें लगाकर पुकारने से क्या हासिल होना है? सोचने वाली बात है कि जीवन में कोई वस्तु अगर सहज अवस्था में मिल रही हो तो क्या उसके लिए कष्ट उठाना जरूरी है। परमात्मा की प्राप्ति भी सद्गुरु की कृपा से सहज में ही हो जाती है। इसे पाने के लिए कष्ट उठाने की नहीं, विनम्र भाव से सद्गुरु के चरणों में शीश झुकाने की आवश्यकता होती है। प्रभु प्राप्ति का उपाय इतना आसान है जैसे किसी पौधे को यहाँ से उखाड़कर वहाँ लगाना बड़ा आसान-सा कार्य होता है। जब पौधे को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह गड्ढा बनाकर लगा दिया जाता है और उसमें पानी डाल दिया जाता है तो वह पौधा नई जगह पर बड़ी आसानी से अपनी जड़ें स्वयं ही जमा लेता है। इसमें पौधा लगाने वाले का इतना ही कार्य होता है कि वह उसे एक स्थान से उखाड़े और दूसरे स्थान पर लगा दे।

इसी प्रकार प्रभु-परमात्मा की प्राप्ति भी सद्गुरु की कृपा से बड़ी आसानी से हो जाती है। जो परमात्मा कण-कण में, जर्रे-जर्रे में मौजूद है उसे पाने के लिए, इसे जानने वाले सद्गुरु का एक इशारा ही पर्याप्त है, इसके लिए अनेकों कर्मकाण्ड करने की जरूरत नहीं होती है।

अन्त में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि वेद-शास्त्र और समस्त धर्मग्रन्थ भी यही कहते हैं कि सद्गुरु के समक्ष शीश झुकाने से यह प्रभु मिलता है। इसके मिलते ही, इस निरंकार को देखते ही मानव का मुरझाया हुआ दिल खिल उठता है। दिल प्रसन्न हो उठता है। मन में खुशी छा जाती है अतएव दुनिया के समस्त इन्सानों, सद्गुरु की शरण में आकर इस निरंकार-प्रभु के दर्शन करके जीवन की समस्त खुशियां हासिल कर लो।

बाबा हरेदव सिंह जी के दिव्य वचन

★ इन्सान को ईमानदारी के साथ अपने फर्जों को अदा करना चाहिए। फर्जों से मुँह मोड़ने का नाम भक्ति नहीं बल्कि फर्जों को अदा करना ही सच्ची भक्ति का एक अंग है।

★ यदि आप दूसरों का उपकार नहीं कर सकते तो अपकार भी मत करो।

★ अपनी दृष्टि को ऐसा विशाल बनाओ जिसमें दूसरों के दोष दिखाई न दें।

★ अपने को मनुष्य बनाने का प्रयत्न करो, मानवता ही सफलता की कुंजी है।

★ ईर्ष्या मानव को उसी तरह खा जाती है जैसे गर्म कपड़े को कीड़ा।

★ लोभी मनुष्य की कामना सदैव अपूर्ण रहती है।

★ मानव सेवा ही मानव का सर्वश्रेष्ठ कर्म है।

★ बलवान होने में नहीं बल का सदुपयोग करने में बड़प्पन है।

★ भलाई जितनी अधिक की जाती है, उतनी ही अधिक फैलती है।

★ अग्नि सोने को परखती है और आपत्ति बहादुरों को।

★ सच्चा मित्र आनन्द को दुगूना और दु:ख को आधा कर देता है।

★ शोषण नहीं पोषण करो।

★ परमात्मा को पाने के लिए परमात्मा का चाह्वान होना जरूरी है।

★ धरती को स्वर्ग बनाने का एक ही तरीका है; इन्सान को इन्सानी फितरत से युक्त होना जरूरी है। ईश्वर को सीमाओं में बाँध लेना मनुष्य की अज्ञानता का प्रमाण है।

★ प्रभु का दरवाजा ऐसा दरवाजा है जहाँ से सभी को झुक कर ही गुजरना पड़ता है।

★ आज इन्सान सत्य की तरफ नहीं, झूठ की तरफ जाग्रत है इसका मानवता की ओर जाग्रत होना बहुत जरूरी है।

★ अंधेरा रोशनी से ही मिटता है किसी और प्रयत्न से नहीं। इसी तरह बंधनों से निजात परमात्मा को जानकर ही मिलती है।

★ जिस प्रकार जलता हुआ दीपक सबको रोशनी बांट सकता है। इसी प्रकार स्वयं जगा हुआ व्यक्ति ही दूसरे का भला कर सकता है; जगा सकता है।

★ उम्र के कारण चेहरे पर भले ही झुर्रियां पड़ जायें पर उत्साह में झुर्रियां न पड़ने दें।

★ दया की नींव को निकालकर इमारत टिक नहीं सकती।

– संग्रहकर्ता : रीटा (दिल्ली)

सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के दिव्य वचन

- ब्रह्मज्ञान की दात पा लेने पर ही संकीर्णताओं से ऊपर उठ कर विशालता प्राप्त कर सकते हैं। भक्तों का जीवन नदी के प्रवाह की भांति सहज होता है। हर पल निरंकार के रंग में रंगे रहते हैं।
- परमात्मा ने हमें सुन्दर मानव जीवन के रूप में एक अनमोल उपहार दिया है। क्या हमने कभी शुकराना किया है? चौरासी लाख योनियों में इन्सानी जन्म को सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। अब यह इन्सान की जिम्मेदारी है कि इन पलों को अनमोल बनाये।
- भक्तजन हर पल निरंकार का अहसास रखते हुए सेवा, सुमिरण, सत्संग करते हैं। हर पल, हर श्वांस निरंकार से जुड़े रहते हैं।
- समस्त धार्मिक ग्रंथों में यही दर्ज है कि समस्त मानव-मात्र एक परमपिता परमात्मा की सन्तान हैं फिर एकता की भावना क्यों नहीं आ पाती। इसका कारण है कि इन्सान एक प्रभु से अंजान है। जब तक एक से जुड़ेंगे नहीं एकता आनी असम्भव है।
- प्रभु का अस्तित्व सनातन है। सत्य केवल परमात्मा है और बाकी सब कुछ क्षणभुंगर है। यह अविनाशी परमात्मा अनादिकाल से एकरस है जो न घटता है और न बढ़ता है।
- जाति, धर्म, भाषा, 'शक्ल-ओ-सूरत' के आधार पर इन्सानों में भिन्नता नज़र आती है परन्तु हैं सब एक ही प्रभु की सन्तान।
- ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुई है तो यह एक दिन समाप्त भी हो जाएगा परन्तु जो उत्पत्ति से पहले था और बाद में भी रहेगा, वह है निरंकार। यही शाश्वत परमात्मा है जो काल से रहित है। इसलिए कहा जाता है कि इन्सान इस जन्म में ही अपने मूल की प्राप्ति कर ले और जीवन को सफल बना ले।
- प्यार, नम्रता, सहनशीलता जैसे गुण मानवीय गुण हैं जो इन्हें धारण कर लेता है वही वास्तव में मानव कहलाने का हकदार है। हर युग और हर दौर में सन्तों ने मानव-मात्र को यही जाग्रति प्रदान की है कि मानुष बन जा।
- सन्त अपने भले तक ही सीमित न होकर सभी के भले की कामना करते हैं और इन्सान को इन्सान के असली स्वरूप की जानकारी करवा कर असली उद्देश्य पूरा करवाने में अपना योगदान देते हैं।
- मानवीय गुणों को जीवन में अपनाने वाले ही विशाल दृष्टिकोण के साथ संसार में विचरण करते हैं। संकीर्णताओं से ऊपर उठें और जाति-पाति के दायरे से बाहर निकलें। जब हम सब एक ही परमपिता-परमात्मा की सन्तान हैं तो फिर भेदभाव क्यों?

– संकलनकर्ता : श्रीराम प्रजापति (दिल्ली)

तो फिर क्या

आलेख : सी.एल. गुलाटी, सचिव, सं.नि.मं.

कई बार इन्सान ऐसी स्थिति में होता है कि उसके मुँह से स्वत: ही निकलता है, 'तो फिर क्या?' ये शब्द बोलने में कितने सरल हैं लेकिन इन शब्दों के अर्थ विभिन्न परिस्थितियों में किस प्रकार बदलते हैं, यह नीचे दिये उदाहरण से स्पष्ट होता है।

माता-पिता बड़ी कठिनाई से बच्चे का पालन-पोषण करते हैं। उसे अच्छी शिक्षा देने के लिए कर्ज़ भी लेते हैं और अपने बच्चे से बड़ी-बड़ी उम्मीदें लगाते हैं। जब योग्यता हासिल करके वह कुछ बन जाता है तो स्वाभाविक ही उसके माता-पिता खुश होते हैं। कई बार तो बच्चा इतना कृतघ्न होता है कि माता-पिता उसको याद दिलाते हैं कि उन्होंने किस तरह से कठिनाइयां सहन करके, इधर-उधर से कर्ज़ लेकर उसको पढ़ाया है तो बच्चा आगे से बोलता है– 'तो फिर क्या?' यह तो आपकी जिम्मेदारी थी। आपने मुझे पैदा किया। मुझे पढ़ाना-लिखाना और किसी अवस्था पर पहुँचाना आपका कर्तव्य था। आपने मेरे ऊपर कोई एहसान नहीं किया। अब आपकी जिम्मेदारी खत्म हो गई है। मैं अपने पैरों पर खड़ा हो गया हूँ। आप अपने आपको सम्भालो। मैं अपने आपको व अपने बीवी बच्चों को सम्भालूंगा।

दूसरी तरफ एक बच्चा ऐसा है जिसको माता-पिता लाड़-प्यार तो देते हैं परन्तु उस पर ज्यादा खर्च करने में समर्थ नहीं होते हैं। जब वह बच्चा पढ़-लिखकर कुछ कमाने योग्य बन जाता है और अपना सारा वेतन अपने माता-पिता के चरणों में लाकर रख देता है तो माता-पिता कहते हैं कि बेटे तुम ये सब कुछ अपने पास रखो। सारे घर का कार्यभार तुम स्वयं ही सम्भालो। हमने तो तुम्हारे लिए न कुछ किया है और न ही करने योग्य हैं।

समझदार बच्चा आगे से माता-पिता को उत्तर देता है कि आपने मेरे लिए क्या कुछ नहीं किया। मैं जो कुछ भी हूँ आपके आशीर्वाद से ही हूँ। अगर आप मुझे लाड़-प्यार न देते और न ही मुझे पढ़ाते तो मैं इस योग्य नहीं होता। ये सब आपकी कृपा से ही सम्भव हुआ है। यह सुनकर उसके माता-पिता कहते हैं– 'तो फिर क्या?' यह तो हमारा कर्तव्य था।

इन दोनों अवस्थाओं में शब्द, 'तो फिर क्या?' का प्रयोग किया गया पर दोनों में जमीन-आसमान का अन्तर है। पहली अवस्था में बच्चे की स्थिति कृतघ्नता वाली है जिसमें माता-पिता ने अपना सब कुछ बच्चे के लिए न्यौछावर कर दिया और बदले में बच्चे ने उनको दुत्कार दिया।

दूसरी स्थिति में बच्चा माता-पिता के प्रति अपने आपको ऋणी समझता है और पूर्ण रूप से उनके चरणों में समर्पित होकर जीवन जीना चाहता है।

इसी प्रकार आज के सामाजिक ढांचे को देखते हुए आवश्यकता है कि जहाँ माता-पिता तन-मन-धन से अपने बच्चे का पालन-पोषण करते हैं वहाँ बच्चे को भी सदा अपने माता-पिता का कृतज्ञ होकर जीवन जीना चाहिए और उनको पूर्ण रूप से प्यार और सत्कार देना चाहिए। यह तभी सम्भव है जब बच्चा अच्छी संगति को अपनाये, जैसे कि आज माता सुदीक्षा जी महाराज बच्चों को शिक्षा देने के लिए जगह-जगह बाल संगतों की स्थापना के लिए प्रेरणा दे रहे हैं।

कहानी : हरजीत निषाद

चीकू-मीकू और चुनचुन

देवल गाँव के बाहर पीपल का एक पेड़ था। पेड़ के पास एक कुआं था। कुआं बहुत पुराना था। वह बहुत गहरा भी था। कुएं में नीचे जहाँ पानी था वहाँ रोशनी बहुत कम थी।

कुएं के गहरे पानी में चीकू और मीकू नाम के दो मेढक रहते थे। वे पानी में टांगें फैलाए तैरते रहते थे। तैरना उन्हें अच्छा लगता था। बैठने की कोई जगह भी तो न थी जिस पर बैठकर कुछ समय वे आपस में गप्पे लगाते। कभी-कभी वे कुएं की दीवार के सहारे लटककर करतब दिखाते। पानी में छलांग लगाना भी उनको खूब अच्छा लगता था।

पानी की सतह से काफी ऊपर कुएं की दीवार में एक कोटर (गड्ढा) था। उसमें चुनचुन नाम की एक चिड़िया रहती थी। चुनचुन ने बाहर से तिनके जमा कर कोटर में एक घोंसला बना लिया था। रोज सुबह वह दाना-दुनका चुगने बाहर चली जाती थी। वहाँ वह दूसरे पक्षियों से चहक-चहककर बातें करती और फिर अपने घोंसले में आकर आराम करती थी।

चुनचुन अक्सर चीकू-मीकू का हालचाल पूछ लिया करती थी। चीकू-मीकू बड़े घमण्डी थे। दोनों में, पानी में छलांग लगाने की होड़ लगी रहती थी। एक बार चुनचुन उनसे दूर-दूर तक लहलहाती फसलों की प्रशंसा करने लगी। उसने उन्हें बताया कि बाहर की दुनिया बहुत बड़ी है। चीकू-मीकू खिलखिलाकर हँस पड़े। उन्हें चुनचुन की बातों पर हँसी आ रही थी। हँसी के बीच मीकू ने एक लम्बी छलांग लगाकर कहा– तुम किस दुनिया की बात कर रही हो, वह मेरी इस छलांग से बड़ी हो तो बताओ?

चुनचुन मुस्कुराकर बोली– नहीं, मीकू! यह तो कुछ भी नहीं है। बाहर की दुनिया तो बहुत बड़ी है।

मीकू ने इस बात पर और लम्बी छलांग लगाई। वह कुएं की दीवार के पास से उछला और कुएं के बीचों-बीच जा गिरा। फिर वह बोला– इससे बड़ी तो नहीं होगी तुम्हारी वह दुनिया।

चुनचुन बोली– नहीं मीकू, तुम समझ नहीं रहे हो, वह बहुत बड़ी है।

अब तक चीकू चुप था लेकिन उन दोनों की बातें सुनकर चीकू ने एक जोरदार छलांग लगाई। इस बार वह कुएं की एक दीवार से कूदा और सामने वाली दीवार के पास जा पहुँचा।

अब चीकू और मीकू दोनों एक साथ बोल उठे– इससे बड़ी तो हो ही नहीं सकती तुम्हारी दुनिया।– और वे जोर-जोर से हँसते हुए चुनचुन का मजाक उड़ाने लगे।

चुनचुन चुप रही। वह भला कर भी क्या सकती थी? बेचारी उन दोनों की हँसी का पात्र बनती रही।

समय बीतता गया। फिर बरसात का मौसम आ गया। नदी-नाले उफनने लगे। एक दिन तो इतना पानी बरसा कि बाढ़ ही आ गई। बाढ़ का पानी कुएं में भी भरने लगा। कुएं का जलस्तर बढ़ने से चुनचुन को अपना घोंसला छोड़कर पेड़ पर शरण लेनी पड़ी। बाढ़ का पानी इतना बढ़ता गया कि कुआं भी उस पानी में डूबकर गायब हो गया। चीकू-मीकू सोचने लगे। कुआं कहाँ गया? उन्होंने पहली बार कुएं से बाहर की दुनिया देखी थी। विशाल आसमान और दूर तक फैली धरती देखकर वे हैरान रह गये। उन्हें चुनचन की बातें सही लगने लगीं। दूर तक सूर्य का उजाला उन्हें बहुत अच्छा लगा। उन्हें आज चुनचुन की बहुत याद आ रही थी। वे सोचने लगे– हम ठहरे कुएं के मेढक और वह खुले आसमान में उड़ने वाली पक्षी। चुनचुन हमें सच कहती थी कि बाहर दुनिया बहुत बड़ी है।

चीकू-मीकू ने वहाँ कई घर भी देखे। घर में बच्चे पाठ याद कर रहे थे– 'हमें अपनी सोच विशाल रखनी चाहिए, कुएं का मेढक बनकर नहीं रहना चाहिए।'

चीकू-मीकू बच्चों की बातें सुनकर झेंप गये। उन्हें आश्चर्य हुआ कि ये बच्चे उनके बारे में कैसे जानते हैं? वे दोनों मुँह छुपाते हुए एक कोने मे जा बैठे। उनका घमण्ड टूट चुका था। कोने में बैठे हुए वे एक-दूसरे की शक्ल देखने लगे। उन दोनों ने निश्चय किया कि घमण्ड अच्छी चीज नहीं है। कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए और अपनी सोच को हमेशा विशाल रखना चाहिए।

कविता : परशुराम शुक्ल

सूरज पाना है

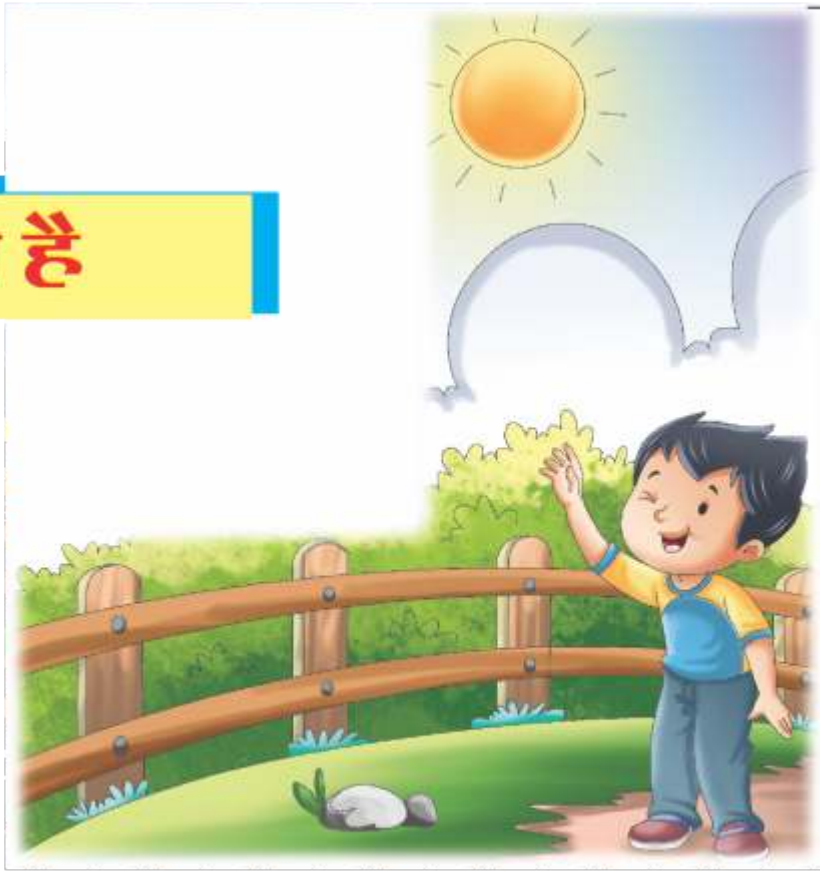

मैं नन्हा सा अंकुर मुझको, सूरज पाना है।

आँधी, पानी, तेज हवाएं, शीत लहर तूफानी।
जाना मुझको दूर बहुत है, राह बड़ी अनजानी।
चारों तरफ बवंडर फिर भी, जड़ें जमाना है।
मैं नन्हा सा अंकुर मुझको, सूरज पाना है।

फूल हमेशा कभी खिले, बस एक बार खिलता है।
यह जीवन ऐसा जीवन जो, एक बार मिलता है।
इस छोटे से जीवन में कुछ, कर दिखलाना है।
मैं नन्हा सा अंकुर मुझको, सूरज पाना है।

मेरे जैसे और बहुत से, अंकुर जग में होंगे।
अंधकार से घबराये वे, सहमे-सहमे होंगे।
इनके भीतर कुछ करने की, अलख जगाना है।
मैं नन्हा सा अंकुर मुझको, सूरज पाना है।

धरती हरी-भरी होगी जब, अंकुर महकेंगे।
इनके मन में रहने वाले, पक्षी चहकेंगे।
मैंने ठान लिया है सारा, जग महकाना है।
मैं नन्हा सा अंकुर मुझको, सूरज पाना है।

बाल कविता : डॉ. देशबन्धु शाहजहाँपुरी

स्वस्थ दीवाली

धांय धांय होती है, जब हम,
बम और लड़ी दगाते।
जलते जब महताब फुलझड़ी,
हैं प्रकाश बिखराते।

लेकिन इससे हम सब मिलकर,
वायु प्रदूषित करते।
तेज ध्वनि और तीव्र रोशनी,
स्वास्थ्य सभी का हरते।

जहरीली गैसों के कारण,
श्वास रोग बढ़ते हैं।
दृष्टि कम होती नयनों की,
फिर चश्में चढ़ते हैं।

यदि आतिशबाजी के बदले,
बांटे गिफ्ट मिठाई।
बिना प्रदूषण आयेगी तब,
स्वस्थ दीवाली भाई।

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

पशुओं की एक बस्ती में एक बकरी अपने बच्चे के साथ रहती थी। उसका नाम था गोलू। वह बहुत शरारती था।

उसे सारा दिन बाहर खेलना अच्छा लगता था। एक दिन वह खेलते-खेलते जंगल की ओर निकल गया।

बकरी ने जब गोलू को घर पर नहीं देखा तो वह परेशन हो गई। वह फटाफट जंगल की ओर भागी। उसे डर था कि गोलू कहीं घने जंगल में न चला जाए। वहाँ तो हर वक्त ही जंगली जानवर शिकार की तलाश में रहते हैं।
बकरी थोड़ा ही आगे गई तो देखा कि गोलू पेड़ों के झुंड में छिपा हुआ था। अपनी माँ को वहाँ देखकर वह खुशी से उछलने लगा।
'माँ, माँ, तुमने मुझे ढूँढ लिया।'
गोलू, तुम्हें कितनी बार मना किया है, इस तरफ आने से।

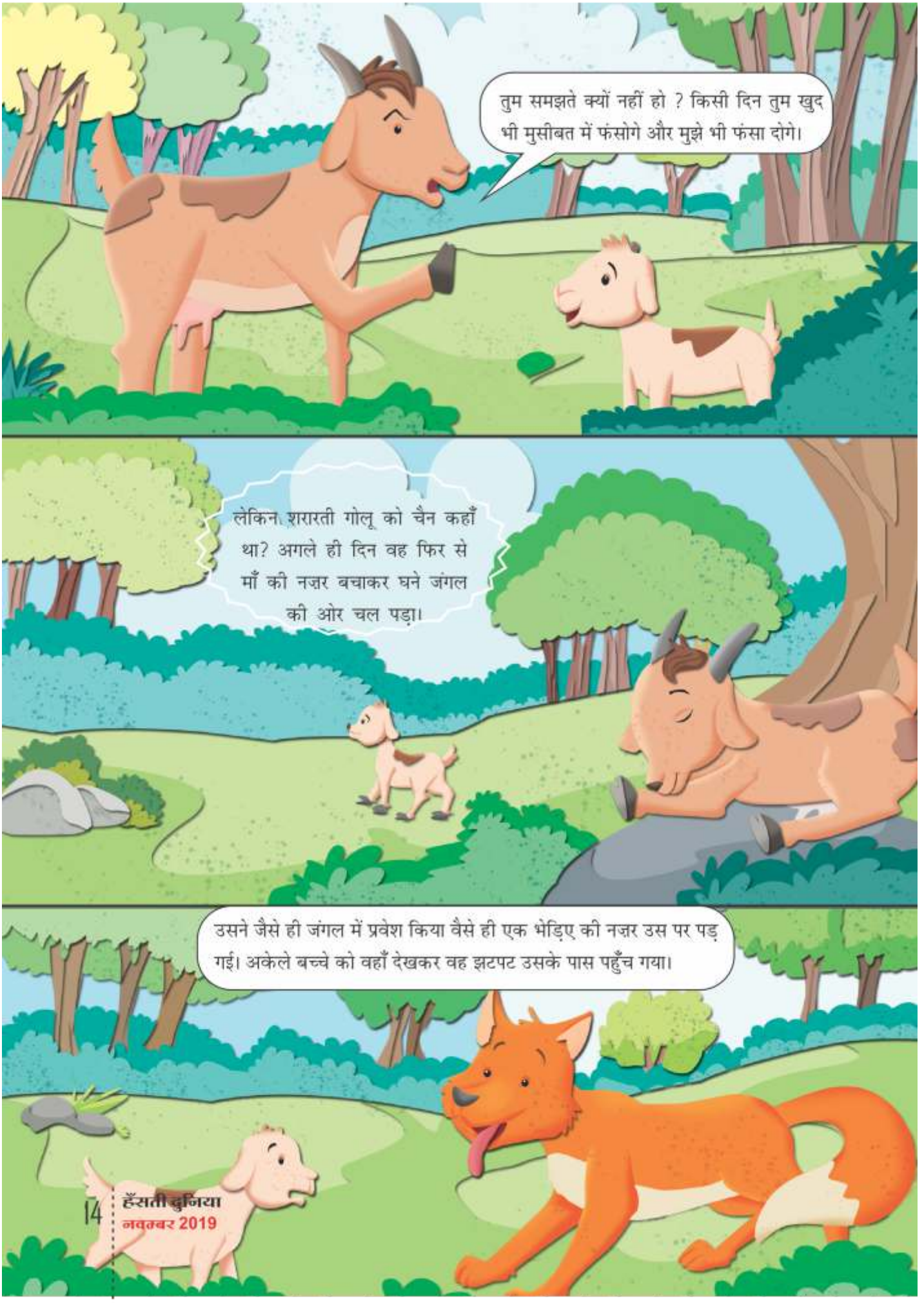
तुम समझते क्यों नहीं हो ? किसी दिन तुम खुद भी मुसीबत में फंसोगे और मुझे भी फंसा दोगे।
लेकिन शरारती गोलू को चैन कहाँ था? अगले ही दिन वह फिर से माँ की नज़र बचाकर घने जंगल की ओर चल पड़ा।
उसने जैसे ही जंगल में प्रवेश किया वैसे ही एक भेड़िए की नज़र उस पर पड़ गई। अकेले बच्चे को वहाँ देखकर वह झटपट उसके पास पहुँच गया।

भेड़िए को यूं अचानक सामने देखकर गोलू घबरा गया। वह मदद के लिए चिल्लाने लगा। लेकिन भेड़िया उस पर झपटने की पूरी तैयारी कर चुका था।

परन्तु, वह अभी झपटने ही वाला था कि अचानक बकरी अपने मित्रों के साथ वहाँ पहुँच गई। एक शिकारी कुत्ता भी उसका मित्र था। वह भी उनके साथ था।

जैसे ही शिकारी कुत्ता ज़ोर से भौंका, भेड़िया डर गया और वहाँ से भाग खड़ा हुआ और गोलू बच गया।
बच्चों! हमें हमेशा अपने माता-पिता का कहना मानना चाहिए। क्योंकि वे ही हमारा सही मार्गदर्शन कर सकते हैं।

चांद की परत में छिपा है सूर्य का इतिहास

वॉशिंगटन (भाषा)। नासा के वैज्ञानिकों के अनुसार चांद पर सूर्य के प्राचीन रहस्यों के सुराग मौजूद हैं जो जीवन के विकास को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं। करीब चार अरब साल पहले सूर्य-सौरमंडल तीव्र विकिरणों, उग्र वेगों, उच्च ऊर्जा वाले बादलों और कणों के घातक प्रकोप से गुजरा था।

नासा के गोडार्ड स्पेस फ्लाइट सेंटर के शोधकर्ताओं ने बताया कि इस प्रकोप ने पृथ्वी की शुरुआत में जीवन के अंकुरण में मदद की और ऐसा पृथ्वी को गर्म तथा नम रखने वाली रासायनिक प्रतिक्रियाओं से हुआ। सेंटर के तारा भौतिकविद् प्रबल सक्सेना का मत है कि पृथ्वी की मिट्टी के मुकाबले चंद्रमा की मिट्टी में कम सोडियम और पोटेशियम हैं जबकि चांद और पृथ्वी की संरचना एक समान तत्व से हुई है।

नासा के ग्रह सम्बन्धी वैज्ञानिक रोजमैरी किलेन ने कहा– पृथ्वी और चांद एक जैसे तत्वों से बने होंगे तो सवाल यह है कि क्यों चांद में इन तत्वों का क्षरण हो गया? इसके बाद दोनों वैज्ञानिकों का विचार है कि सूर्य का इतिहास चांद की परत में छिपा है।

– संकलनकर्ता : बबलू कुमार

आसमान में उड़ेगा इंसान!

खुले आसमान में परिन्दों को स्वच्छंद रूप से उड़ते देख आपके मन में भी वैसी ही उड़ने की कल्पना आने लगती है। क्या रियल लाइफ में ऐसा हो पाना सम्भव है? हवाई जहाज में बैठकर उड़ना एक बात है और स्वयं का उड़ना दूसरी बात। लेकिन हॉलीवुड फिल्म 'आयरन मैन' का सुपर हीरो अब रियल लाइफ में साकार होगा। जी हाँ, अब 'जेट सूट' पहनकर आसमान में उड़ा जा सकेगा।

हॉलीवुड फिल्म 'आयरन मैन' के सुपरहीरो टोनी स्टॉर्क ने जैसा बॉडी सूट पहनकर चिड़िया की तरह उड़ने का चमत्कार दिखाया। अब कुछ वैसा ही जेट सूट पहनकर उड़ा जा सकेगा। कम्पनी ने पहनने योग्य उड़ान प्रणाली से लैस सूट का पेटेंट हासिल किया है।

ग्रेविटी के संस्थापक रिचर्ड ब्राउनिंग पहले ही जेट सूट से उड़ान का 20 से ज्यादा देशों में प्रदर्शन कर चुके हैं। अब वे प्रतियोगिता टीमों के लिए 'जेट सूट' बनाएंगे।

जेट सूट को पहनने योग्य उड़ान प्रणाली कहा जा रहा है। इसमें पांच गैस टरबाइन इंजन लगे हैं, जो दोनों हाथों और पीठ पर लगाए जाते हैं। 1000 से ज्यादा हॉर्सपावर के इंजन से यह उड़ान भरता है और 89 किमी. प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ सकता है। ब्राउनिंग ने 2017 में 51 कि.मी. प्रति घंटे से उड़कर गिनीज वर्ल्ड स्पीड रिकॉर्ड बनाया था, जिसे उन्होंने अब पीछे छोड़ दिया है।

प्रस्तुति : डॉ. विनोद गुप्ता (मन्दसौर)

दो कविताएं : राजकुमार जैन 'राजन'

प्यार का पर्व दिवाली

प्रीत प्यार का पर्व दिवाली,
मौसम का उपहार दिवाली।
हम सब मिलकर दीपदान कर,
बना सकें रोशन दिवाली।

दीप मालिका के प्रकाश में,
नव भारत की नींव बनाएं।
सबके अधरों पर हो लाली,
ऐसा कुछ हम सब कर पाएं।

जो टूटे दिल तम में भटके,
नई ज्योति से उन्हें जोड़ दें।
भेद-भाव से रहित प्रेम के,
समता पथ में उन्हें मोड़ दें।

तरह तरह के दीप जलाकर,
हम पुनीत कर्तव्य निभाएं।
इच्छा है मन की जीवन में,
नित्य नवीन सृजन कर पाएं।

फिर आई दिवाली

लो भाई देखो, गया दशहरा,
फिर आई है दिवाली।
पापा मन में सोच रहे हैं,
हुई जेब अब खाली।

छत पर और मुंडेरों पर भी,
दीपों की ये देख कतारें।
लगता जैसे आसमान में,
टिम-टिम चमकें तारे।

नन्हें-नन्हें दीप हैं जलते,
लगते कितने प्यारे।
इन नन्हें दीपों के आगे,
घोर अंधेरा हारे।

मम्मी घर में बना रही है,
कितने ही पकवान।
जी भरकर हम सब खाएंगे,
और खाएंगे सब मेहमान।

रोचक जानकारी : ऋषि मोहन श्रीवास्तव

अद्भुत समुद्री जगत

रॉकेट-स्क्वीड : स्क्वीड का नाम बहुत से लोगों ने नहीं सुना होगा। कुछ लोग इसे 'समुद्री रॉकेट' के नाम से भी जानते हैं। समुद्र की तह में, गहराई पर स्क्वीड पाया जाता है। इसके सिर से जुड़े हुए दस हाथ-पैरों में आठ तो एक जैसी लम्बाई के होते हैं और दो शिकार को पकड़ने के काम आते हैं।

स्कवीड दो तरह के पाये जाते हैं। लघु और विशाल। लघु आमतौर पर अधिकतम दो फुट तक की लम्बाई में पाये जाते हैं परन्तु विशालकाय की लम्बाई 43 फुट तक भी होती है। 2007 में न्यूजीलैंड में एक विशाल स्कवीड पकड़ी गई थी। जिसका वजन 495 किलोग्राम था। विशाल स्क्वीड कभी-कभी व्हेल मछली तक से भिड़ जाता है। व्हेल मछली इसको खाने के लिए ज्यों ही पास आती है, यह अपना दैत्याकार रूप बना लेता है। दोनों के बीच अक्सर घमासान लड़ाई होती है।

स्क्वीड की कुछ प्रजातियों में प्रकाश उत्पन्न करने का विशेष गुण पाया जाता है। मेरी लाइकोथ्यूटिस हिटरियोथ्यूटिस नामक जातियां प्रकाश उत्पन्न करती हैं। जापानी लोग अपने खेतों में कई बार इसकी खाद भी डालते हैं। स्क्वीड के शरीर में एक थैली होती है। जिसमें काला, नीला, चमकीला रंग भरा होता है, जो स्याही बनाने में सहायक होता है।

उछल-कूद मचाने वाला पौपस : पौपस जल के भीतर रहने वाला और मछली की तरह देखने वाला बड़ा भारी जीव है। इसका वजन 300 से 350 पौंड तक भी पाया जाता है। कभी-कभी पौपस जल के अलावा थल पर भी बहुत कम देर के लिए आता है। मछलियों की तरह यह भी जल के भीतर उछल-कूद मचाता रहता है। इसे यह उधमबाजी करना विशेष पसन्द है।

लम्बे समय तक पानी में डुबकी लगाना और सांस रोके रहना पौपस की आदत है। डुबकी लगाने और सांस को रोके रखने में पूंछ के सिरे काफी मदद करते हैं। एक मजेदार बात यह है कि इसके मुंह के जबड़े में बड़े-बड़े दांत पाए जाते हैं। इन जबड़ों में 50-50 की संख्या में दांत पाए जाते हैं।

पौपस की एक विचित्र आदत है कि यह तरह-तरह की विचित्र आवाजें निकालता है। चमगादड़ की तरह इसे भी पानी में अपना रास्ता बनाने में मुश्किल

नहीं होती। चमगादड़ जिस प्रकार हवा में अपना रास्ता खोज लेती है। वैसे ही यह पानी के भीतर सुगमतापूर्वक चलता रहता है। अनेक वैज्ञानिकों का मानना है कि पौपस का मस्तिष्क काफी विकसित होता है।

स्पंज : यह एक छिद्रदार बहुकोशीय जन्तु है। जो समुद्र के गहरे जल में पाया जाता है। इसकी अनेक जातियां होती हैं। स्पंज विभिन्न प्रकार के आकर्षक रंगों में भी मिलते हैं। कभी-कभी ये इस प्रकार का आकार ग्रहण कर लेते हैं कि लगता है कि कोई फूलों का गुलदस्ता हो।

इनका आकार भी कई प्रकार का होता है। कोई एक मिलीमीटर तो कोई दो मीटर से भी ज्यादा लम्बा। स्पंज अधिकतर ठोस वस्तुओं के ऊपर अपना घर बनाते हैं। इन्हें एक ही स्थान पर पड़े रहने के कारण ही सुस्त जीव कहा जाता है।

स्पंज का मुख्य भोजन सूक्ष्य बैक्टीरिया, डायटम एवं छोटे-छोटे जन्तु हैं। सूर्य के प्रकाश में स्पंज अपना रंग बदलने लगते हैं। शत्रुओं से बचाव करने के लिए प्रकृति ने इन्हें सुरक्षा के हथियार दिए हैं, जिन्हें 'स्पिक्यूल्स' कहते हैं। इन्हीं 'स्पिक्यूल्स' के कारण मांसाहारी जीव इनसे घृणा करते हैं। जैसे ही स्पंज को पानी से बाहर निकाला जाता है, वैसे ही इनके शरीर से एक लेसदार पदार्थ निकलने लगता है जिससे इनका शरीर भी सूखने नहीं पाता।

स्पंज में एक विशेषता पायी जाती है कि यह अपने टूटे-फूटे शरीर को फिर से बना लेता है। स्पंज के छोटे-छोटे टुकड़े भी अनुकूल वातावरण मिलने पर नया स्पंज बना लेते हैं।

आजकल तो स्पंज हमारे दैनिक जीवन में काफी काम आने लगा है। घरों में फर्नीचर आदि की पॉलिश करने, चीनी मिट्टी के बर्तनों में चमक लाने, घरो की डेकोरेशन, छापेखानों की सामग्री एवं गद्दीयां बनाने में इनका काफी उपयोग होता है। इनकी बढ़ती हुई खपत के कारण आजकल तो समुद्र में इनकी 'कृत्रिम खेती' भी की जाती है।

कैट फिश : कैट फिश एक ऐसी मछली है जो अपने बच्चों का पालन-पोषण अपने मुँह में ही करती है। अण्डे तो मादा मछली ही देती है किन्तु अण्डों को सेने का काम नर करता है।

कितनी विचित्र बात है कि जब तक नर कैट फिश का मुँह अण्डों से भरा रहता है तब तक यह बेचारा कुछ भी खा नहीं पाता, यानि इसे उपवास रखना पड़ता है। लगभग एक महीने के बाद जब छोटे-छोटे बच्चे निकलते हैं तो कुछ दिनों के लिए माता कैट फिश भी इन बच्चों को मुँह में रख लेती है। खतरा होने पर यह तुरन्त अपना मुँह खोल देती है और पानी में तैरते हुए बच्चे इसके मुँह में बन्द हो जाते हैं।

कैटफिश के अण्डों की संख्या कभी-कभी 3-4 दर्जन के करीब होती है। बच्चे सेने के समय नर कैट फिश कुछ नहीं खाता लेकिन जब बच्चे अण्डों से बाहर निकलते हैं तो यह इतना भूखा होता है कि इसके आस-पास जो भी जीव-जन्तु या अन्य वस्तुएं होती हैं वह सब खा जाता है। कभी-कभी इसे इतनी अधिक भूख लगती है कि यह अपने ही बच्चों को खा जाता है।

बाल कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

ईनाम का हकदार

राजस्थान के दक्षिण में एक छोटा सा आदिवासी गाँव है राजपुर। यहाँ के लोगों के अपनी रीति-रिवाज, परम्पराएं व रहन-सहन के तरीके हैं। लोग अब पढ़ने-लिखने भी लगे हैं।

जब राजपुर में ग्राम पंचायत का गठन हुआ तो सरपंच बनें रामप्रसाद। सरपंच इतना अच्छा आदमी था कि हमेशा हर आदमी की सहायता करने के लिए तैयार रहता था। वह गाँववालों के सुख-दुख में हमेशा साथ देता और उन्हें नेक सलाह दिया करता।

दीवाली में कुछ ही दिन शेष थे। रामप्रसाद ने गाँव में ढिंढोरा पिटवा दिया कि इस बार दीवाली की रात जिसका घर सबसे अधिक सुन्दर सजा होगा, उसे ईनाम दिया जाएगा।

यह ढिंढोरा सुनते ही गाँववाले अपने-अपने घरों को सजाने में पूरी मेहनत से जुट गए।

लड़कियां माण्डणे बनाने के लिए खड़िया मिट्टी एवं आवश्यक सामान इकट्ठा करने में लग गईं। बच्चे पटाखे और फुलझड़ियां जमा करने लगे। बुजुर्ग और महिलाओं ने दीये, तेल, मिठाईयां, मोमबत्तियां कंदील खरीद लिए। सभी लोग घरों की पुताई-सफाई में लग गये।

दीवाली की शाम तो राजपुर दुल्हन की तरह सज गया। सभी ने अपने घरों के अन्दर व बाहर माण्डणे बनाकर जगह-जगह दीये और मोमबत्तियां जलाकर रख दीं। बाहर के पेड़ों पर कंदील लटका दिए। पूरा गाँव रोशनी से जगमगा उठा।

बच्चों ने पटाखे-फुलझड़ियां छोड़ना शुरू कर दिया। बच्चे व बड़े सभी नये-नये कपड़ों में सजे प्रसन्न थे।

शाम आठ बजे सरपंच रामप्रसाद अपने कुछ साथियों के साथ गाँव की दीवाली देखने निकला।

सभी घरों को सुन्दर ढंग से सजाया गया था। रामप्रसाद यह नहीं समझ पा रहा था कि किस घर की सजावट को वह सबसे सुन्दर मानें।

रामप्रसाद अपने साथियों के साथ जब गंगाराम के घर के सामने पहुँचा तो चौंक गया। घर के सामने और घर के अन्दर सिर्फ एक-एक दीया जल रहा था।

सरपंच रामप्रसाद ने जब गंगाराम को आवाज दी तो वह बाहर आया। सरपंच ने पूछा– भाई गंगाराम, पूरा गाँव दीपों की रोशनी से जगमगा रहा है पर तुम्हारे यहाँ सिर्फ दो ही दीये जल रहे हैं। तुमने अपना घर क्यों नहीं सजाया?

–सरपंच जी, बात यह है कि कुछ दिन पहले हमारे पड़ोसी नारायण की पत्नी के पिताजी गुजर गये थे। इसीलिए नारायण और उसके घरवाले दीवाली मनाना नहीं चाह रहे थे। मैंने नारायण को समझाया और दीवाली का सारा सामान अपने पैसों से खरीदकर उसके घर दे आया। इस समय मेरी पत्नी और बच्चे नारायण के घर पर उसका घर सजा रहे हैं।

सरपंच रामप्रसाद, जो आश्चर्य से गंगाराम को देख रहा था, बोला– पर कुछ दिन पहले तो नारायण और तुम्हारी लड़ाई हुई थी तथा तुम दोनों मे बोलचाल भी बन्द थी।

–हाँ कुछ दिन पहले हम दोनों में झगड़ा हो गया था पर दीवाली के दीये की लौ में हम दोनों ने अपनी शत्रुता को जलाकर भस्म कर दिया। अब हम दोनों मित्र हैं।– गंगाराम बोला।

सरपंच को बहुत प्रसन्नता हुई। उसने गंगाराम को गले से लगा लिया और बोला– मुझे तुम पर बहुत गर्व है। दीवाली तो सभी मनाते हैं पर सच्ची दीवाली इस बार तुमने ही मनाई है। मैं तुम्हें ही ईनाम का हकदार घोषित करता हूँ।

और फिर पंचायत भवन पर अगले दिन एक समारोह हुआ जिसमें गंगाराम को सम्मानित किया गया। सरपंच रामप्रसाद ने गंगाराम का किस्सा उपस्थित लोगों को सुनाते हुए उसे पंचायत का सलाहकार नियुक्त किया। •

ज्ञान भरी विज्ञान की बातें

1. माचिस की डिबिया पर क्या लगा होता है?

☐ माचिस की डिबिया पर रेड फॉस्फोरस लगा होता है।

2. कुएं में कौनसी दवा डाली जाती है?

☐ पोटेशियम परमैंगनेट या ब्लीचिंग पाउडर डाला जाता है।

3. पीने के पानी में कौनसी गैस मिलाई जाती है?

☐ नाइट्रोजन गैस जो कि अक्रियाशील होती है।

4. गोताखोर अपने पास कौनसी गैस लिए रहते हैं?

☐ ऑक्सीजन गैस।

5. मनुष्य के आंसू में क्या पाया जाता है?

☐ सोडियम क्लोराइड।

6. नकली सोना किसे कहते हैं?

☐ आयरन ऑक्साइड को।

7. सबसे लचीली धातु कौनसी है?

☐ सोना।

8. कौन सा रसायन पानी में जलता है?

☐ सोडियम।

9. सबसे विषाक्त पदार्थ कौनसा होता है?

☐ रेडियम।

10. कौन सी ऐसी गैस है जिसको सूंघने पर आदमी केवल हँसता ही रहता है?

☐ नाइट्रस ऑक्साइड के सूंघने पर।

11. पत्तियों का रंग हरा क्यों होता है?

☐ क्लोरोफिल के कारण।

– प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

उल्टा-सीधा

फिर भी सीधा ही सीधा होता है।

1. ऐसी भारतीय भाषा का नाम बताओ? जिसमें 5 अक्षर हैं। जिसे प्रारम्भ से पढ़े या अन्त से दोनों ओर से एक ही नाम आता है।
2. एक अति मूल्यवान धातु का नाम भी उल्टा-सीधा एक समान है।
3. शरीर के एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग का नाम बताओ? जो दोनों ओर से पढ़ने पर एक ही लगे। यह हमारी ज्ञानेन्द्रियों में से एक है।
4. भारत के एक स्थान का नाम ऐसा है जिसे उल्टा-सीधा पढ़ने पर वही आता है। उस स्थान का नाम बताओ?
5. खाना बनाने में काम आने वाली एक चीज का नाम भी तीन अक्षरों का है। उल्टा-सीधा पढ़ने पर वही रहता है।
6. भारत में हिन्दी भाषा में छपने वाले एक दैनिक अखबार का नाम भी ऐसा है कि वह किधर से भी पढ़ो नाम एक ही जैसा आयेगा।
7. एक पुष्प भी है जिसका नाम शुरू से पढ़ो या अन्त से एक ही जैसा आता है। उस पुष्प का नाम बताओ?
8. आवागमन के एक वाहन का नाम भी उल्टा अथवा सीधा पढ़ें तो एक ही समान होता है। उसका नाम बताओ?

उत्तर : *1. मलयालम, 2. कनक (सोना), 3. नयन (आँख), 4. कालका, 5. डालडा (एक कृत्रिम घी), 6. नवजीवन, 7. जलज (कमल), 8. जहाज।*

– प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

कविता : परशुराम शुक्ल

रंग बिरंगी धरती

रंग बिरंगी धरती बच्चों,
रंग बिरंगी धरती।

देखो बच्चों इस धरती पर,
वृक्ष हरे लहराते।
इस पर बैठे पक्षी मीठे-
मीठे राग सुनाते।
इनके नीचे रोज सवेरे,
छोटी हिरनी चरती।
रंग बिरंगी धरती बच्चों,
रंग बिरंगी धरती।

ऊँचे-ऊँचे पर्वत-नदियां,
सबकी बात निराली।
इनकी शान बढ़ा देती है,
जंगल की हरियाली।
बूढ़ी नानी इस जंगल की,
हरदम रक्षा करती।
रंग बिरंगी धरती बच्चों,
रंग बिरंगी धरती।

जंगल का धरती से बच्चों,
बड़ा पुराना नाता।
बाघ, सिंह, गैंडे, हाथी को,
सारा जंगल भाता।
पानी और हवा जंगल की,
सबकी पीड़ा हरती।
रंग बिरंगी धरती बच्चों,
रंग बिरंगी धरती।

हरे-भरे लहराने वाले,
जंगल को मत काटो।
मार जंगली जीवों को तुम,
मौत न सबको बांटो।
जीव, जंगलों के मिटते ही,
सारी दुनिया मरती।
रंग बिरंगी धरती बच्चों,
रंग बिरंगी धरती।

लेख : डॉ. विद्या श्रीवास्तव

केला सबको है पसन्द

यह एक स्वास्थ्यवर्धक फल है। यह एक ऐसा मधुर स्वादिष्ट फल है जो प्राय: सभी लोगों को पसन्द है। यह अन्य फलों की तुलना में ज्यादा महंगा भी नहीं है। इसे आसानी से सभी लोग खरीद सकते है। यह पूरे वर्ष फलों की दुकान व ठेलों पर मिल जाता है। सर्वप्रथम यह इंडोनेशिया के जंगलों और दक्षिण पूर्व एशिया के क्षेत्र में पाया गया। सोलहवीं शताब्दी के आस-पास स्पेन के लोग जब अमेरिका आए तो उन्होंने अमेरिका में केले के पेड़ लगाए। केले का पेड़ बीज से तैयार नहीं होता है। जमीन के भीतर पहुँचने वाले तने से ही केले का पेड़ तैयार होता है, इसे केले की गांठ भी कहा जाता है।

चिकित्सक इसे विटामिनों का भंडार कहते हैं। इसमें कैल्शियम, पोटेशियम और खनिज लवण पाये जाते हैं। योगासन करने के बाद ऊर्जा प्राप्त करने के लिए केला खाने की सलाह दी जाती है। ब्लडप्रेशर को नियंत्रित करने में केला गुणकारी है। केला ऐसा फल है जो सिर्फ सहारा रेगिस्तान को छोड़कर समस्त स्थानों पर उत्पादित किया जा रहा है। भारतवर्ष केला उत्पादन में अग्रणी देश माना जाता है। महाराष्ट्र में जहाँ इसकी विपुल पैदावार होती है। वहीं गुजरात, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश में भी इसके बड़े-बड़े बगीचे हैं। मध्यप्रदेश के खंडवा, खरगौन क्षेत्रों में केले का काफी उत्पादन होता है।

केले की लगभग 300 प्रकार की प्रजातियां तैयार की गई हैं। पौष्टिक, स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक फलों में केले की गिनती की जाती है। फल के अतिरिक्त केले के पेड़ का प्रत्येक भाग जड़, तना, पत्ते आदि सभी काम में आते हैं। कच्चे केले की सब्जी बनाई जाती है। केले के चिप्स भी पौष्टिक माने जाते हैं। केले की जड़ों का विभिन्न रोगों में स्कर्वी रोधक, कफ रोधक, भूख न लगने के रोग, मधुमेह के कारण अपच, कुष्ठ रोग आदि में प्रयोग किया जाता है।

केले के फल को पेड़ों से कच्चा ही तोड़ लिया जाता है। बाद में उसे रासायनिक क्रिया द्वारा पकाया जाता है। इसलिये बाजार से आप जो भी केला लाएं उसे सर्वप्रथम साफ पानी से धो लें जिससे उसके केमिकल साफ हो जाएं और आपको किसी भी प्रकार की हानि नहीं हो। विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाने में केले का भरपूर प्रयोग किया जाता है। केले का रायता, केले की चटनी, केले के कोफ्ते, चिप्स आदि बहुत लोगों को प्रिय हैं। दक्षिण भारत में केले के पत्तों पर भोजन कराने की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है।

बच्चों का यह प्यारा फल है। केला चिकित्सकों की राय में बच्चों के लिए सबसे अधिक पौष्टिक फल माना जाता है जो इन्हें बहुत छोटी उम्र से खाने को दिया जाता है। इसमें विभिन्न खनिज तत्वों और विटामिन्स का भंडार है जो नवजात की शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक है।

सामान्यत: केले का पेड़ 15 से 30 फुट तक ऊँचाई का पाया जाता है। इसकी पत्तियां 7 से 8 फुट लम्बी होती हैं। केले के वृक्ष पर गुच्छों के रूप में केले आते हैं। केले के गूदे में सामान्यत: 75 प्रतिशत पानी, 20 प्रतिशत शक्कर, 2 प्रतिशत प्रोटीन, 1 प्रतिशत वसा, 1 से 2 प्रतिशत विटामिन्स होते हैं।

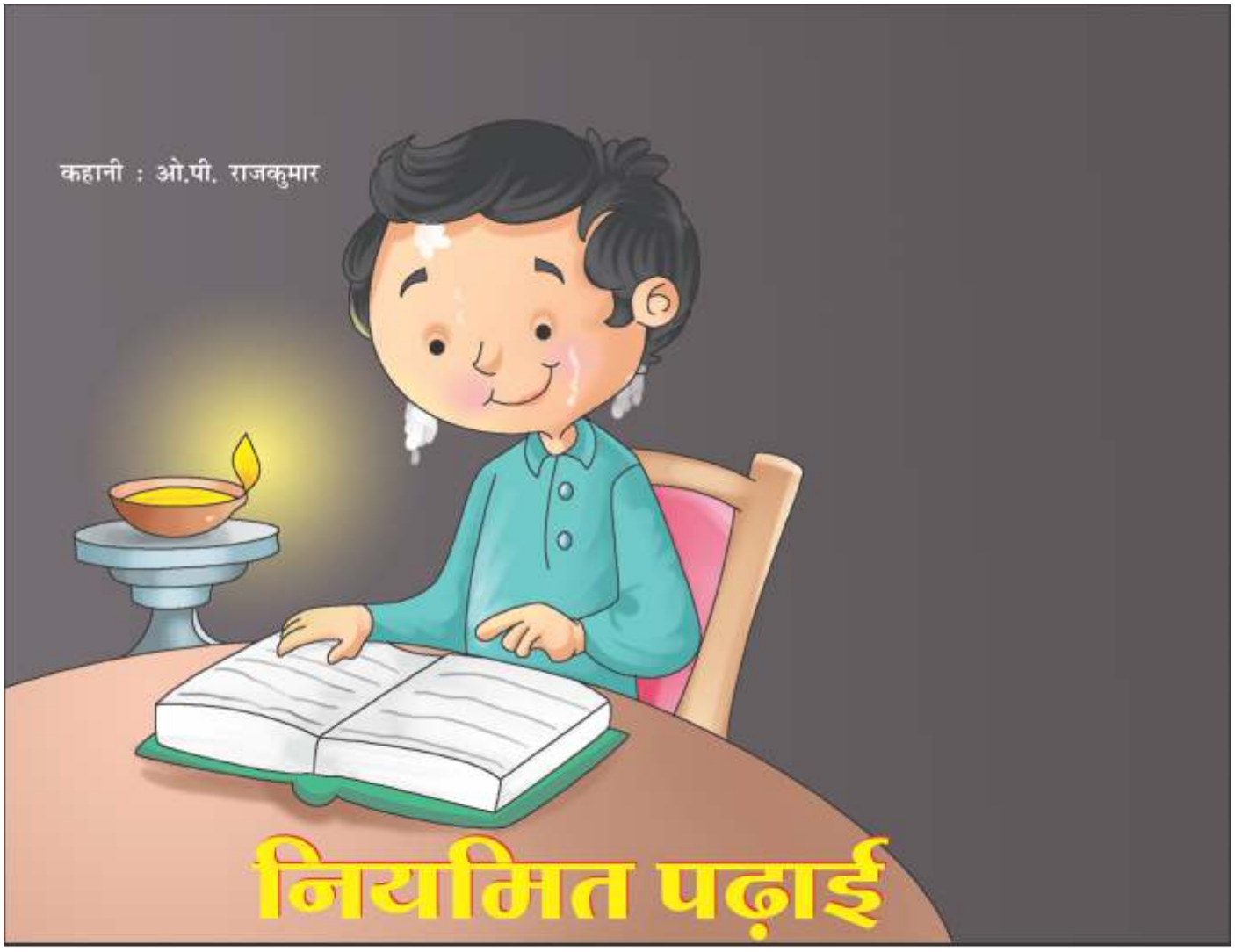

कहानी : ओ.पी. राजकुमार

नियमित पढ़ाई

गीतेन्द्र हमेशा अपनी परीक्षा मे प्रथम आता था। इस वर्ष ग्रीष्मावकाश के बाद उसकी पढ़ाई प्रारम्भ हुई तो वह हमेशा की भांति अपनी पढ़ाई में जुट गया। एक रात बिजली चली जाने पर वह दीपक जलाकर अपनी पढ़ाई कर था तभी उसके पड़ोस में रहने वाला लोकेश वहाँ पर आ गया। वह उसके विद्यालय में उसकी कक्षा में ही पढ़ता था। गीतेन्द्र को पसीने में भीगे हुए देखकर वह उससे बोला– 'अभी तो पढ़ाई शुरू ही हुई है और तुम अभी से अपनी पढ़ाई में जुट गये? पढ़ाई के लिए तो पूरा साल पड़ा हुआ है।' सुनकर गीतेन्द्र मुस्कुराते हुए उससे बोला– 'नियमित रूप से अपनी पढ़ाई करने पर ही हम लोग अपनी परीक्षा में अच्छी श्रेणी में उत्तीर्ण हो सकते हैं।'

सुनकर लोकेश उसकी ओर देखने लगा तो गीतेन्द्र उससे बोला– 'अपनी कक्षा में पढ़ते समय हमें अपने शिक्षकों की बातों को भी ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए और अगर उनकी कोई बात हमारी समझ में न आए तो उसे उसी समय उनसे पूछना चाहिए। अधिकांश छात्र उस समय उनकी बातों पर अपना ध्यान न देकर अपनी दूसरी बातों में ही उलझे रहते हैं।'

'यही हाल मेरा है यार। मैं भी यह सोचकर उस समय ध्यान नहीं देता हूँ कि उन्हें मैं अपनी किताबों

में ही पढ़ लूंगा।' सुनकर लोकेश ने कहा तो किसी काम से वहाँ पर आई उसकी माँ उनकी इन बातों को सुनकर उससे बोली– 'तभी तो तू हर साल कभी सप्लीमेंट्री से तो कभी ग्रेस से पास होता है।'

गीतेन्द्र फिर बोला– 'नियमित रूप से अपनी पढ़ाई करने पर हम लोग अपने शिक्षकों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी सही ढंग से दे सकते हैं और परीक्षा के दिनों में भी हमें उनकी तैयारी करने में भी अधिक परेशानी नहीं होती है। नियमित रूप से पढ़ाई न करने वाले छात्र अपनी परीक्षा के दिनों में कुछ प्रश्नों को याद कर लेते हैं। अगर संयोगवश वे उनके प्रश्नपत्रों में आ जाते हैं तो ठीक वरना वे अनुत्तीर्ण हो जाते हैं।'

यह सुनकर लोकेश उसकी बुद्धिमानी पर मुस्कुराने लगा तो गीतेन्द्र उससे बोला– 'नियमित रूप से पढ़ाई करने वाले छात्रों को हर प्रश्न का जवाब पूर्ण रूप से याद रहता है। अपनी परीक्षाओं में वे हर प्रश्न का जवाब सही ढंग से देकर न सिर्फ अच्छी श्रेणी में अपनी परीक्षाएं उत्तीर्ण करते हैं बल्कि वे विशेष योग्यता प्राप्त करके अपने विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त करते हैं।'

गीतेन्द्र की इन बातों को सुनकर लोकेश नियमित पढ़ाई का महत्व जान चुका था। वह अपनी एक परेशानी के बारे में उससे बोला– 'मैं प्रश्नों के जवाबों को रटता रहता हूँ। जरा सा भूल जाने पर मैं उन्हें बिल्कुल ही भूल जाता हूँ।'

यह सुनकर गीतेन्द्र उसकी इस परेशानी का हल बताते हुए बोला– 'हमें अपने प्रश्नों के उत्तर रटने नहीं चाहिए बल्कि समझने चाहिए। समझते हुए प्रश्नों के उत्तर को याद करने से हम लोग उन्हें आसानी से याद रख सकते हैं।' सुनकर लोकेश खुशी से मुस्कुरा उठा था। गीतेन्द्र उसे आगे बताते हुए बोला– 'नियमित रूप से अपनी पढ़ाई करने का हमें एक लाभ यह भी होता है कि किसी वजह से हमें वार्षिक परीक्षा के दिनों मे पढ़ाई के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाए तब भी हम अपनी परीक्षा ठीक ढंग से दे सकते हैं।

पिछले वर्ष परीक्षा के दिनों में मेरी मम्मी की तबियत अचानक खराब हो गयी थी। इस वजह से मुझे अपनी पढ़ाई के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाया था। मैं कुछ ही समय तक पढ़ाई करके परीक्षाएं देता रहा था। मगर फिर भी मैंने अपनी परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थीं।

'अब मैं नियमित पढ़ाई का महत्व समझ चुका हूँ। अब मैं भी आज से ही अपनी नियमित रूप से पढ़ाई करके अपनी परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करके अपनी मम्मी के सपनों को पूरा करने की कोशिश करूंगा।' लोकेश ने कहा और अपने घर की ओर चल दिया।

लेख : डॉ. विद्या श्रीवास्तव

कैसे बने जल से स्वास्थ्य

कुछ लोग स्वस्थ रहने के लिए जल-चिकित्सा का सहारा लेते हैं। यदि देखा जाए तो हमारे शरीर का लगभग 70 प्रतिशत भाग पानी ही है। जल का अपना विशेष असर हमारे शरीर पर होता है। यदि जल की कमी होती है तो शरीर की त्वचा खुश्क व सुखी होने लगती है। सामान्य रूप से हमें अपने शरीर में जल की सही मात्रा का नियंत्रण रखना जरूरी है। स्त्री व पुरुष के शरीर में जल के अनुपात में सिर्फ दो प्रतिशत का अन्तर होता है। हमें अपने शरीर के भार का 5-6 प्रतिशत तक पानी पीना चाहिए। पानी से ही शरीर के विजातीय पदार्थ पेशाब और मल आदि बाहर निकलते हैं।

आजकल देखा जाता है कि लोग खड़े-खड़े पानी पीते हैं। खड़े-खड़े पानी पीना स्वास्थ्य के लिए बहुत नुकसानदायक है। जब भी पानी पीना हो बैठकर ही पानी पियें। बैठकर पानी पीने से, पानी धीरे-धीरे आंतों में पहुँचता है और आंतों की सफाई करता है।

वैज्ञानिक तथ्यों से प्रमाणित हुआ है कि जो लोग खड़े-खड़े जल पीते है। उन्हें 'थायराइड' की शिकायत बहुत जल्दी होती है। बल्कि यह मानिए जो लोग बैठकर हमेशा पानी पीते हैं उनकी 'थायराइड' की शिकायत शनै-शनै मिटने लगती है। पानी जब पियें तो गिलास को मुँह से लगायें। इस प्रकार मुँह में उपस्थित स्लाइवा व लार पानी के साथ पेट में पहुँचता है। पेट में लाइपेज टाइलिन व एमाइलेज लार पेट को स्वस्थ रखती है।

वैज्ञानिकों के अनुसार जब धीरे-धीरे पानी पिया जाता है तो गुर्दों को भी फिल्ट्रेशन करने में आसानी रहती है। इस प्रकार से कई प्रकार की गन्दगी दूर होती है। कुछ लोग बहुत तेजी से गिलास का पानी पी जाते हैं। भोजन के एक घंटे पहले व आधा घंटा बाद ही पर्याप्त मात्रा में पानी पियें। खाना खाते समय बार-बार पानी पीने से खाना बिना पचे हुए ही आंतों में चला जाता है और इस प्रकार अपच व कब्ज जैसी शिकायतें हो जाती हैं। कोशिश करें कि खाने के आधा घंटे बाद ही पानी पियें।

पानी का महत्व जिस प्रकार खाने में है। ठीक उसी तरह नहाने के लिए भी है। हमेशा ताजे साफ स्वच्छ जल से स्नान करना चाहिए।

सुबह उठकर खाली पेट पानी पीना भी स्वास्थ्यवर्धक और लाभकारी है। बस रात्रि में पेस्ट या मंजन करके सोना जरूरी है। इससे रात्रि की मुँह की गन्दगी पेट में नहीं जाएगी। अंगुली से रात्रि में पेस्ट करना बिल्कुल उचित नहीं है।

कभी भी एकदम ठंडा (चिल वाटर) पानी नहीं पीना चाहिए। जो लोग गर्मियों में लगातार ठंडा पानी पीते हैं। उनकी अग्नि एकदम मंद हो जाती है। इस प्रकार अग्नि मंद होने से उन्हें खाना नहीं पचता। ऐसे लोगों का या तो पेट फूलता है या खट्टी डकारें, उबकाई जैसी आती हैं। गर्म खाने के साथ एकदम ठंडा पानी पीना और भी ज्यादा नुकसानदायक है। आप सामान्य तापमान के पानी को पियें। ठंडा-गर्म होने से पेट के अन्य विकारों के जन्म लेने का खतरा बना रहता है। गंदगी से शरीर पर या शरीर के अन्य अंगों पर संक्रमण हो सकता है। प्रयास करें सुबह एक-दो गिलास गुनगुना पानी पियें इससे शरीर के तमाम विकार निष्कृत होते हैं।

लेख : किरण बाला

दुनिया का सबसे ऊँचा रेल पुल

वैसे तो दुनिया में नदियों पर बने रेलवे पुलों की कमी नहीं है। यकीनन इनमें से कुछ पुल ऐसे भी हैं जो ऊँचाई में इतने अधिक हैं कि उन्हें देखकर हैरत होती है। क्या आप जानते हैं कि दुनिया का सबसे ऊँचा रेल ब्रिज भारत में निर्माणाधीन है?

फिलहाल, दुनिया का सबसे ऊँचा रेलवे ब्रिज फ्रांस के तरन नदी पर बना हुआ है। जिसका सबसे ऊँचा खंभा 340 मीटर है। लेकिन भारत में जम्मू-कश्मीर में चिनाब नदी पर बन रहा रेलवे पुल फ्रांस के पुल से भी कहीं अधिक ऊँचा होगा। जी हाँ, रियासी जिले में बक्कल और कौड़ी के बीच बन रहे पुल की नदी तल से ऊँचाई 359 मीटर होगी। यह पुल 324 मीटर ऊँचे एफिल टॉवर से भी 35 मीटर ऊँचा है। पुल की कुल लम्बाई 1.3 किलोमीटर है।

इस पुल की कई खूबियां हैं। ब्रिज 17 केबल्स पर टिका होगा। ब्रिज में दो ट्रेक होंगे। एक की चौड़ाई 14 मीटर होगी। इसके अलावा निरीक्षण के लिए 1.2 मीटर चौड़ा एक रास्ता भी होगा।

इस ब्रिज का निर्माण कोंकण रेलवे ऊधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक परियोजना के तहत कर रहा है। पुल के निर्माण पर करीब 1200 करोड़ रुपये खर्च आ रहा है। इस प्रोजेक्ट में डीआरडीओ समेत देश के 15 बड़े संस्थान कोंकण रेलवे की मदद कर रहे हैं। इस ब्रिज में ब्लास्ट लोड टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल हुआ है। किसी भी विस्फोट और प्रेशर का ब्रिज पर असर नहीं होगा।

111 किलोमीटर लंबे कटरा और बनिहाल मार्ग पर रेल ब्रिज बनने से कश्मीर रेलमार्ग के जरिए देश से जुड़ जाएगा। अभी बनिहाल और बारामूला के बीच रेल है पर कटरा-बनिहाल के बीच नहीं है। यह क्षेत्र भूकम्प के लिहाज से सेसमिक जोन-4 में आता है। इसलिए पुल को सेसमिक जोन-5 के हिसाब से तैयार किया जा रहा है।

चिनाब ब्रिज बनाने में मेहराब तकनीक (हैंगिंग आर्च) का इस्तेमाल हो रहा है। ब्रिज 266 किमी./घंटे रफ्तार की हवा का भी सामना कर सकता है।

यह पुल ऑनलाइन मॉनिटरिंग एंड वार्निंग सिस्टम से लैस होगा। ब्रिज निर्माण में ब्लास्ट प्रूफ स्टील का प्रयोग हुआ है। इस ब्रिज के निर्माण में 29 हजार मीट्रिक टन इस्पात का इस्तेमाल किया जाएगा।

ऊधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक प्रोजेक्ट 346 किमी. लम्बा है। इस प्रोजेक्ट का एक हिस्सा जो कटरा से धरम के बीच 100 किमी. लम्बा है। उसमें 52 किमी. का रेलमार्ग कोंकण रेलवे बना रहा है। इसमें 46.1 रास्ता टनल (सुरंग) तथा 5 किमी. ब्रिज से होकर जाता है। इस मार्ग में 17 टनल हैं। सबसे लम्बी टनल 9.3 किमी. लम्बा है। जिनमें सबसे ऊँचा ब्रिज 91 मीटर का है।

इस प्रोजेक्ट की नींव 2004 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने रखी थी। 5 हजार वर्कर पिछले 15 सालों से इस पर काम कर रहे हैं। उम्मीद है कि यह पुल 2019 के अंत तक बनकर तैयार हो जाएगा।

कविता : राधेलाल 'नवचक्र'

पढ़ो और लिखो

लिखो कुछ, पढ़ो कुछ नयन,
है बहुत गोलमाल।
कठिनाई होती खूब,
उनमें सुनो कमाल।।

भाषा लिपि अपनी छोड़,
पर की कैसी चाह।
अपनापन जिसमें न हो,
उस पर कैसी वाह।।

खो देंगे एक दिन हम,
पहले निज पहचान।
अजनबी बन जाएंगे,
निज घर में श्रीमान।।

अपने को जो भूलता,
उसका न कुछ वजूद।
होते विकास की सभी,
राहें सुन अवरुद्ध।।

इन बातों पर गौर कर,
पकड़ सही तू राह।
निज भाषा लिपि के प्रति,
कुछ तो कर परवाह।।

यही हमारा धर्म है,
राष्ट्र की आवाज।
हिन्दी भाषा नागरी,
लिपि का हो स्वराज।।

कविता : अनिल द्विवेदी 'तपन'

मेहनत करना है सुखदायी

चूं-चूं करती आई चिड़ियां,
रंग-बिरंगी आई चिड़ियां।

फुदक-फुदक कर दाना खातीं,
सबके ही मन को ये भातीं।

कठिन परिश्रम है ये करतीं,
कोसों दूर गगन में उड़तीं।

मेहनत करना है सुखदायी,
चिड़ियों ने यह सीख सिखायी।

वैज्ञानिक जानकारी : घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : चन्द्रमा की सतह पर अंतरिक्ष यात्री एक-दूसरे की आवाज क्यों नहीं सुन सकते हैं?

उत्तर : चन्द्रमा की सतह पर वायु नहीं है। ध्वनि वायु के माध्यम से ही एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाती है। अतः चन्द्रमा पर अंतरिक्ष यात्री एक-दूसरे की आवाज नहीं सुन सकते हैं। वे रेडियो-तरंगों के माध्यम से ही आपस में सम्पर्क करते हैं।

प्रश्न : तेल-टैंकरों को भरते समय ऊपर कुछ खाली स्थान क्यों छोड़ दिया जाता है?

उत्तर : टैंकरों को भरते समय ऊपर कुछ खाली स्थान छोड़ दिया जाता है। इसका कारण यह है कि भीतर दाब कम हो जाता है और टैंकरों के बाहर दाब अधिक होता है। हवा अधिक दाब से कम दाब की ओर बहती है। इसलिए टैंकरों का ढक्कन ठीक से बन्द हो जाता है।

प्रश्न : बस की छत पर रखे सामान को रस्सी से बांधना जरूरी क्यों होता है?

उत्तर : तेज गति से चलती बस की छत पर हवा तेज गति से बहती हुई अनुभव होती है। छत पर रखा सामान भी उसी वेग से बस के साथ आगे बढ़ता है जिस वेग से बस आगे बढ़ती है। जब तेज गति से बस अपनी दिशा बदलती है तो गति के जड़त्व के कारण छत पर रखा सामान भी उसी दिशा में स्थानान्तरित होना चाहता है जिसके परिणामस्वरूप वह छत से नीचे गिर जाता है। सामान को गिरने से बचाने के लिए प्रायः उसे रस्सी से बांध दिया जाता है।

कहानी : मोहम्मद फहीम

खेत की रखवाली

कालू भालू एक मेहनती किसान था। उसके खेत में हर बार अच्छी फसल होती थी। इस बार कालू ने अपने खेत में मूंगफली बोई थी। उसने खेत में दिन-रात मेहनत की। धीरे-धीरे उसकी मेहनत रंग लाई। मूंगफलियों के पौधों की जड़ों में अब मूंगफलियों के गुच्छे पनपने लगे थे।

एक दिन कालू जब अपने खेत पर गया तो उसने देखा कि मूंगफलियों के गुच्छों को चूहे कुतर रहे हैं। उसे चूहों पर बहुत गुस्सा आया। उसने अपने मुँह से जोरदार आवाज निकाली। सारे चूहे दुम दबाकर 'नौ दो ग्यारह' हो गये।

अब कालू को यह चिन्ता सताने लगी कि अगर चूहे इसी तरह मूंगफलियों को खाते रहे तो उसकी मेहनत पर पानी फिर जायेगा। क्यों न खेत की रखवाली के लिए किसी रखवाले को रख लूं। यही सब सोचता हुआ वह पिंकू कुत्ते के पास जा पहुँचा और बोला– पिंकू, अगर तुम मेरे खेत की रखवाली करने को तैयार हो जाओ तो मैं तुम्हें मूंगफली का एक बोरा दूंगा।

पिंकू को दिनभर कोई काम न था वह खेत की रखवाली करने सहर्ष तैयार हो गया। उसी दिन से वह कालू के खेत की रखवाली करने लगा।

उधर सारे चूहे भूख से व्याकुल हो उठे। वे पिंकू के डर से खेत के पास फटकते तक न थे। एक दिन चूहों के सरदार चूंचूं ने एक सभा बुलाई और सारे चूहों को सम्बोधित करते हुए कहा– अगर पिंकू इसी तरह खेत की रखवाली करता रहा तो हमारी भूखों मरने की नौबत आ जाएगी।

–तुम मेरे साथ पिंकू के पास चलो; मैंने एक तरकीब सोची है। फिर देखना, सांप भी मर जाएगा और लाठी भी न टूटेगी।

सारे चूहे सहमे-सहमे पिंकू के पास जा पहुँचे। पिंकू को लगा कि सारे चूहे फसल कुतरने आ रहे हैं। वह सावधान हो गया और जोर-जोर से भोंकने लगा। चूंचूं आगे बढ़ा और साहस के साथ बोला– गुस्सा न होइए, पिंकू जी! हम आपकी मदद करने आए हैं। आपको बहुत दिनों से भूरी बिल्ली की तलाश है न; वह भूरी जो आपका खाना चुपके से चटकर जाती है, मैं आपको उसका पता बता सकता हूँ।

–हाँ हाँ बताओ, कहाँ है भूरी? मुझे उसको मजा चखाना है।– पिंकू गुर्राते हुए बोला।

चूंचूं ने देखा कि उसका तीर सही निशाने पर लगा है, वह बोला– हम ऐसे नहीं बताएंगे आपको हमारी एक शर्त माननी होगी।

पिंकू बोला– शर्त, कैसी शर्त?

चूंचूं बोला– शर्त यह है कि आप हम लोगों को खेत में घुसने का मौका देंगे।

पिंकू चूंचूं की बातों में आ गया। वह बोला– ठीक है मंजूर।

अब सभी चूहे खुशी से झूम उठे। चूंचूं ने पिंकू को भूरी का पता बता दिया। बेचारी भूरी की तो जान पर बन आई। वह पिंकू से अपनी जान बचाती भागने लगी। अब तो चूहों की मौज हो गई। वे हर रोज खेत में दावत उड़ाने लगे।

एक दिन कालू अपने खेत पर आया तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसने देखा कि पिंकू खेत से गायब है और चूहे मस्ती से फसल कुतर रहे हैं। वह अपना मुँह फाड़कर चिल्लाता हुआ आगे बढ़ा। सारे चूहों में खलबली मच गई। वे जैसे-तैसे जान बचाकर वहाँ से भाग निकले।

अपनी नष्ट हुई फसल देख कालू की आँखें भर आईं। वह सोचने लगा अगर मैंने अपने खेत की रखवाली खुद की होती तो यह अंजाम न होता। अपने काम को दूसरों पर टालने का यही परिणाम होता है। उसी दिन से कालू ने अपने खेत के किनारे एक अटरिया बनाई और अपने खेत की रखवाली खुद करने लगा।

बाल कविता : मीनू सिंह

बुलबुल

कितनी प्यारी बुलबुल लगती,
सिर पर उसके जटा है जचती।

गोल-गोल हैं आँखें इसकी,
लाल ग्रीवा सबको छलती।

रोज-रोज मेरे घर आती,
नन्हें-नन्हें पंख हिलाती।

नित नये करतब दिखलाकर,
बाल-बृन्द सबके मन भाती।

उड़ती रहती नील गगन में,
दाना खाने भू पर आती।

चीं-चीं का संगीत सुनाकर,
फुर्र-फुर्र करके है उड़ जाती।

बाल कविता : महेन्द्र कुमार वर्मा

गौरैया

आंगन में आती गौरैया,
मन लुभा जाती गौरैया।

दाना-दुनका चोंच में भर के,
झटपट उड़ जाती गौरैया।

धूल में जब वो खूब नहाती,
बरखा-सन्देश लाती गौरैया।

देख के मुख दर्पण में अपना,
खुद से लड़ जाती गौरैया।

कमरे के कोने में अक्सर,
नीड़ बना रहती गौरैया।

बिल्ली को आते देखे तो,
डर कर छुप जाती गौरैया।

चीं चीं चीं का शोर मचाकर,
हमें जगा देती गौरैया।

कविता : ऋषि मोहन श्रीवास्तव

गौरैया

गौरैया घर आंगन की चिड़िया,
दाना-चुगती पानी पीती चिड़िया।

घर आंगन इससे सुन्दर लगता,
डोले जब इधर-उधर चिड़िया।

दोस्त जल्दी यह बन जाती,
पास फिर न आने से डरती।

हाथ से यह चुगती दाने,
घर में डोले हर कोने।

प्यार से जब इसे बुलाओगे,
पल भर में आ जाएगी।

प्यार तुम इसे करोगे?
यह भी तुमसे प्यार करेगी।

छत पर रोज डालना दाने,
आ जाएगी गौरैया खाने।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

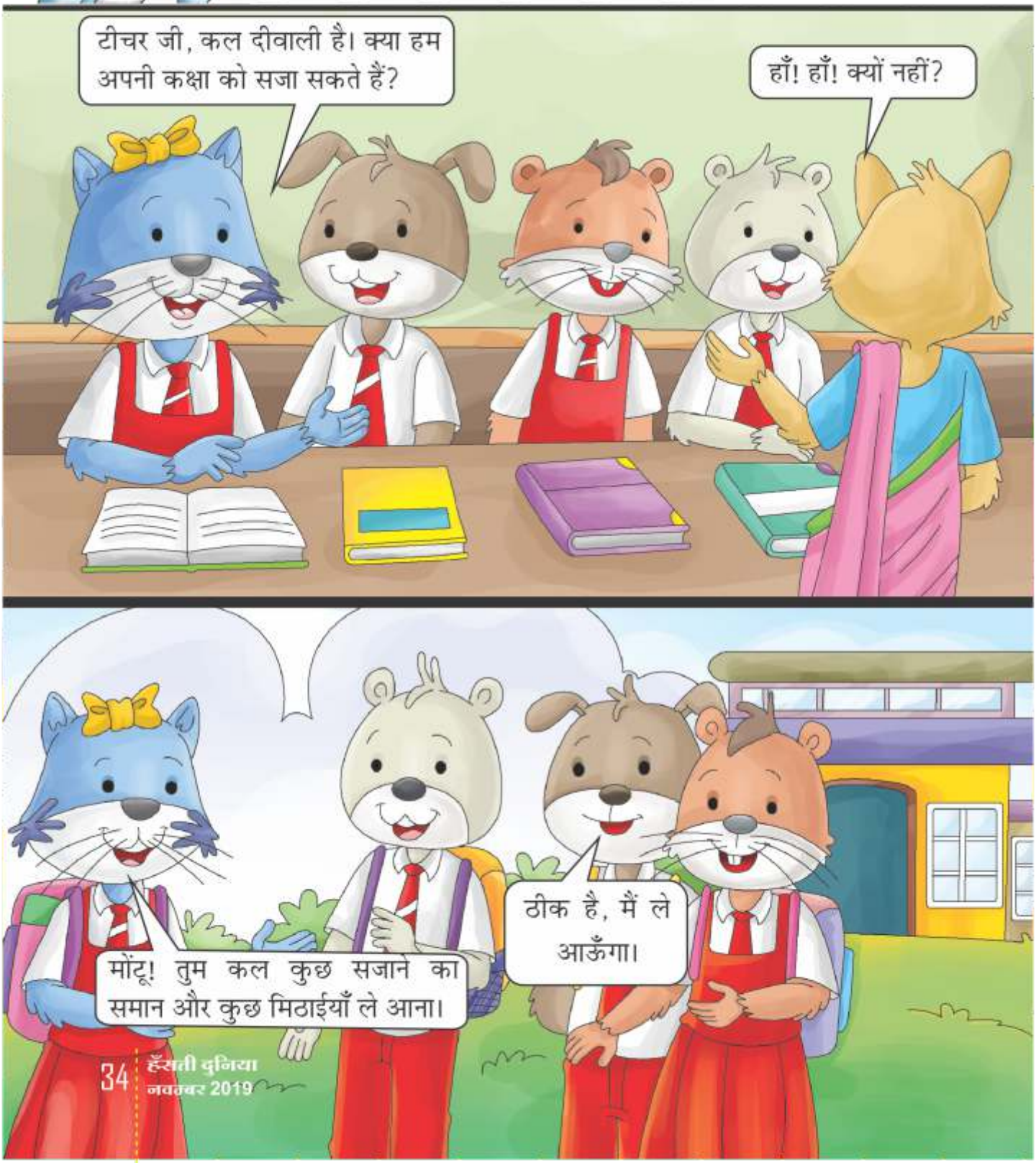

मोंटू! तुम सजावट का कौन-कौन सा सामान लाये हो?
अरे! वाह कितनी सुंदर-सुंदर चीज़े हैं।
चलो! चलो! अपनी कक्षा को सजाते हैं।
मोंटू! मुझे भी तो मिठाई दे दो।
हाँ अभी देता हूँ।
हम सब शाम को मिलकर दीवाली मनाएँगे।
हाँ! हाँ! बहुत मज़ा आएगा।

तुम सब शाम को मेरे घर आ जाना हम सब वहीं दीवाली मनाएँगे।
हम सब पटाखें भी जालाएँगे।
नहीं! नहीं इस बार हम प्रदूषण रहित दीवाली मनाएँगें।
किट्टी! हम सब आ गए।
किट्टी! चलो हम सब मिलकर दीये जलाते हैं।
चलो चिंटू! चुप-चाप बाहर जाकर पटाखे जलाते हैं।
ठीक है, पर किट्टी ना देख ले।

मैंने तुमको मना किया था न बम- पटाखे मत जलाओ।
किट्टी! लेकिन बिना बम- पटाखों के दीवाली का मज़ा कैसे आएगा?
हमें टीचर ने बताया था कि बम-पटाखे जलाने से वातावरण प्रदूषित होता है और धुएँ से बिमारी फैलती है।
किट्टी! तुम ठीक कह रही हो। हम दीये जलाकर ही सब तरफ़ रोशनी करेंगे।

– संग्रहकर्ता : जगतार 'चमन' (अनूपगढ़)

कभी न भूलो

★ सज्जनों के सत्संग से ही बुद्धि तेज होती है; वाणी से सत्य की वर्षा होती है; उन्नत गौरव प्राप्त होता है; पाप मिट जाते हैं और मन शान्त होता है। – ब्रह्मर्षि निर्मल जोशी

★ सबसे बड़ा अपराध अन्याय सहना और गलत के साथ समझौता करना है। – सुभाषचन्द्र बोस

★ सम्पूर्ण विश्व मेरा देश है सम्पूर्ण मानव समाज मेरा बन्धु है और भलाई करना ही मेरा धर्म है। – थॉमस पेन

★ जो तेरे सामने औरों की निन्दा करता है वह औरों के सामने तेरी भी निन्दा अवश्य करेगा। – शेख सादी

★ सच्चे मित्र को दोनों हाथों से पकड़कर रखो। – नाइजिरियन कहावत

★ अगर आप सोचते हैं कि आप कर सकते हैं तो कर सकते हैं। अगर आप सोचते हैं कि आप नहीं कर सकते तो आप नहीं कर सकते। – अल्बर्ट आइंस्टीन

★ जैसे नमक के बिना भोजन स्वाद रहित और फीका लगता है, वैसे ही सार के बिना वाचाल के कथन किसी को रूचि कर नहीं लगते। – संत तुकाराम

★ मुँह के सामने मीठी बातें करने और पीठ पीछे छुरी चलाने वाले मित्र को विष भरे घड़े की तरह छोड़ दो। – हितोपदेश

★ आपकी कीमत इसमें है कि आप क्या है, इसमें नहीं कि आपके पास क्या है? – एडिसन

★ ज्ञानी वह है, जो वर्तमान को ठीक प्रकार समझे और परिस्थिति के अनुसार आचरण करें। – विनोबा भावे

★ अगर हम गिरते हैं तो अधिक अच्छी तरह चलने का रहस्य सीख जाते हैं। – महर्षि अरविन्द

★ संकट के समय धैर्य धारण करना मानो आधी लड़ाई जीत लेना है। – प्लाट्स

★ शक्ति जीवन है, निर्बलता मृत्यु है। विस्तार जीवन है, संकुचन मृत्यु है। प्रेम जीवन है, द्वेष मृत्यु है।

★ आत्मविश्वास सरीखा दूसरा कोई मित्र नहीं। यही हमारी उन्नति में सबसे बड़ा सहायक होता है। – स्वामी विवेकानंद

★ जो काम घड़ों जल से नहीं होता उसे दवा के दो घूंट कर देते हैं और जो काम तलवार से नहीं होता वह कांटा कर देता है। – सुदर्शन

★ अच्छी तरह जान लीजिए कि आपको आपके सिवाय कोई और सफलता नहीं दिला सकता। – नेपोलियन

★ व्यक्ति अपने विचारों से निर्मित प्राणी है, वह जो सोचता है वही बन जाता है। – महात्मा गाँधी

★ जब ऐसा लगे कि लक्ष्य हासिल करना मुश्किल है तो लक्ष्यों में फेरबदल न करें बल्कि अपने प्रयासों में सकारात्मक बदलाव करें। – कंफ्यूशियस

★ हम प्रयास के लिए उत्तरदायी हैं, न कि परिणाम के लिए। – भगवद्गीता

★ प्रतीक्षा मत करो जितना तुम सोचते हो जिन्दगी उससे ज्यादा तेजी से निकल रही है। – अज्ञात

कहानी : डॉ. दर्शन सिंह 'आश्ट'

अब बोलो

पंकज और साजन दोनों जुड़वां भाई थे लेकिन दोनो के स्वभाव में जमीन-आसमान का अन्तर था। पंकज हमेशा दूसरों के काम आकर खुशी अनुभव करता था। कभी पड़ोस में किसी बुजुर्ग व्यक्ति का किसी चीज की जरूरत होती तो वह ला देता। जब किसी के घर कोई मेहमान आकर उनसे अपने सम्बन्धी का घर पूछता तो पंकज खुद उसे सम्बन्धी के घर तक छोड़ आता था। दूसरी तरफ साजन को किसी काम के लिए कहा जाता तो झट टके-सा जवाब देता, "मैं किसी का नौकर नहीं हूँ।" और तो और जब पंकज किसी की कोई मदद कर रहा होता तो साजन उसका मजाक उड़ाता लेकिन पंकज उसकी कोई परवाह न करता। जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे से दोनों भाइयों के बिल्कुल उलट स्वभाव की बात करता तो जवाब मिलता, "आदमी आदमी में अन्तर। कोई हीरा कोई पत्थर।" खैर...।

एक दिन जब दोपहर के बाद स्कूल से छुट्टी हुई तो सब विद्यार्थी अपने-अपने घरों की ओर आने लगे। पंकज भी साजन को साइकिल के पीछे बैठाकर घर आ रहा था। साजन पंकज से आज दोपहर को आने वाले पसंदीदा सीरियल की बातें कर रहा था। सड़क पर काफी आवाजाई थी। उनके आगे उनके ही स्कूल में पढ़ने वाली एक लड़की रेणुका भी अपनी साइकिल पर चल रही थी। तभी अचानक किसी वाहन के जोर से टकराने की आवाज सुनाई दी। उलट दिशा से आ रहे दो लड़को ने अपना स्कूटर रेणुका की साइकिल में दे मारा था। रेणुका जोर से सड़क पर गिर पड़ी और मारे दर्द के चिल्ला रही थी। बजाय वे लड़के रेणुका को उठाकर उसकी कोई मदद करते। अपना स्कूटर स्टार्ट करके भाग निकले। तब तक पंकज ने सारा माजरा अपनी आँखों से देख लिया था। जब दोनों स्कूटर सवार तेजी से पंकज के पास से बचकर निकल रहे थे तो पंकज ने तत्काल अपनी जेब से पेन निकाला और कागज पर स्कूटर का नम्बर नोट कर लिया।

पंकज ने जल्दी से गिरी हुई रेणुका को सम्भाला। उसने देखा रेणुका के सिर पर चोट आई थी और घाव से खून बह रहा था। उसे तुरन्त अस्पताल ले जाना बेहद जरूरी था। पंकज ने वहाँ से किसी व्यक्ति के मोबाइल से रेणुका के घरवालों को फोन कर दिया कि वे रेणुका को सरकारी अस्पताल लेकर जा रहे हैं। सड़क से लोग तेजी से अपनी-अपनी धुन में मगन हुए गुजरते जा रहे थे लेकिन किसी ने भी जख्मी रेणुका की ओर ध्यान नहीं दिया था। अब पंकज ही उसे सम्भाल रहा था। तब तक एक वहाँ एक बुजुर्ग महिला भी आ खड़ी हुई।

पंकज रेणुका को सहारा देता हुआ साजन से बोला– 'साजन, जल्दी करो। इसे अभी अस्पताल

लेकर चलें वर्ना खून और भी ज्यादा बह जाएगा। किसी रिक्शा वाले को बुलाओ।'

रेणुका को अस्पताल ले जाने की बात सुनकर जैसे साजन के मुँह का स्वाद कड़वा हो गया। उसे ऐसा करना समय बर्बाद करने वाली बात लगी।

तुमने इसके मम्मी-पापा को फोन तो कर ही दिया है। वह आ ही रहें होंगे। वे इसे खुद अस्पताल ले जाएंगे।

पंकज ने कहा– 'नहीं साजन। इतना समय नहीं। मेरी सुनो और कोई रिक्शा ढूंढो।'

साजन ने पंकज को संकेत करके अपने पास बुलाया और धीरे से बोला– 'इसे अस्पताल ले जाने के पंगे में मत पड़ो। उल्टा पुलिस केस दर्ज करके तुम्हें ही फंसा लेगी। तुमसे खामख्वाह पूछताछ करेगी। गवाही देनी पड़ेगी। फिर देखोगे इधर-उधर। इसे पेड़ के नीचे बिठा दो। इसके मम्मी-पापा आ ही रहें होंगे।'

अरे जब पुलिस मुझसे पूछताछ करेगी तो बता दूंगा सब कुछ जो मैंने देखा है। यह सब कुछ तो बाद में देखा जाएगा पहले...। वह बोला।

साजन फिर टालमटोल करने लगा। साजन की नीयत को भांपकर पास खड़ी बुजुर्ग महिला बोली– 'बेटा, यह लड़का ठीक कह रहा हें इसे फौरन अस्पताल ले जाओ। इसे गहरी चोट लगी है। देखो तो खून कैसे बह रहा है।'

साजन ने घड़ी पर नजर दौड़ाई। दो बजने वाले थे।

वह बोला– 'पंकज, तुम अपनी हरकतों से बाज नहीं आते। मेरे मनपसंद सीरियल का टाइम होने वाला हे। मैं तो चला।'

यह बात सुनते ही पंकज एकदम सकते में आ गया। वह बोला– 'साजन, कुछ तो शर्म करो। यहाँ जान की पड़ी है और तुझे सीरियल सूझ रहे हैं। जाओ तुम जाकर अपनी सीरियल देखो। मैं अकेला ही इसे अस्पताल ले जा रहा हूँ।'

साजन ढीठाई के साथ साइकिल पर सवार होकर घर की ओर रवाना हो गया।

तभी एक रिक्शेवाला वहाँ आया। पंकज ने रेणुका की साइकिल पास की एक दुकान पर खड़ी की और फिर उसे फौरन रिक्शा पर बैठाकर सरकारी अस्पताल ले आया। अस्पताल ज्यादा दूर नहीं था।

डॉक्टर रेणुका का उपचार करने में जुट गया। पंकज उनके पास ही एक बेंच पर बैठ गया और यथायोग्य मदद करने लगा।

अचानक ही पंकज के मन में तरह-तरह के विचार आने लगे– 'कहीं साजन ठीक ही तो नहीं कर रहा था कि पुलिस अब मुझसे भी पूछताछ करेगी? क्या मेरे साथ ही मम्मी-पापा को भी बुलाया जाएगा? यदि पुलिसवालों ने यह कह दिया कि तुमने ही इसकी साइकिल में टक्कर मारी होगी और बचने के लिए इसे अस्पताल ले आया फिर

क्या करूंगा? मेरी तो परीक्षा भी कुछ दिनों में शुरू होने वाली है। न जाने कौन-कौन सी परीक्षा में से मुझे गुजरना पड़ेगा?'

फिर उसने अपने आप में आत्मविश्वास पैदा किया। 'कोई बात नहीं। पुलिसवाले मुझसे जो-जो पूछेंगे, सही-सही बता दूंगा। मैं बिल्कुल नहीं डरूंगा। एक्सीडेंट के मामले में किसी की सहायता करना कोई गुनाह तो नहीं है।'

उधेड़बुन में फंसे पंकज की नजर अचानक रेणुका के पापा पर पड़ी तो वह एकदम खड़ा हो गया। पंकज रेणुका के पापा को लेकर फटाफट एमरजेंसी रूम में ले गया।

'डॉक्टर साहब, मेरी बेटी...?' रेणुका के पापा ने हैरानी-परेशानी की मिली-जुली भावना प्रकट करते हुए पूछा।

डॉक्टर ने बताया– 'घबराने की कोई बात नहीं है। रेणुका को सही समय पर अस्पताल में लाया गया हैं यदि ज्यादा देर हो जाती तो जरूर चिंता वाली बात हो सकती थी। शाम को ही इसे अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया जाएगा।'

'अंकल, मैंने उन स्कूटर सवारों के स्कूटर का नंबर भी नोट कर लिया था। यह लो।' इतना कहकर पंकज ने एक कागज का टुकड़ा अपनी जेब से निकालकर रेणुका के पापा को दे दिया।

पुलिस चौकी अस्पताल में ही थी। तब तक पुलिस के पास अस्पताल में आए नये एक्सीडेंटल केस की सूचना पहुँच चुकी थी। पुलिस कर्मचारी अब बयान लिख रहा था। रेणुका के पापा ने स्कूटर सवारों के स्कूटर का नंबर पुलिस कर्मचारी के हवाले कर दिया।

अभी बातें हो रही थीं कि रेणुका ने आँखें खोलीं। अपने आपको अस्पताल में पाकर वह रोने लगी लेकिन पापा उसे धैर्य देने लगे।

पुलिस कर्मचारी को पता लग चुका था कि पंकज ही जख्मी रेणुका को एक रिक्शे में अस्पताल लेकर आया है। उसने पंकज को थपकी देते हुए कहा– 'शाबाश, तुम्हारे जैसे बच्चे बहुत कम होते हैं। अब उन स्कूटर सवारों के खिलाफ कार्यवाही होगी।'

पुलिस कर्मचारी को बयान लिख चुकने के पश्चात् अब पंकज ने अपने अन्दर का डर भी प्रकट कर ही दिया। 'अंकल, क्या मुझसे भी कोई...?'

पंकज की बात का संकेत समझते हुए पुलिस कर्मचारी ने पंकज को तिरछी नजरों से देखते हुए कहा– 'हाँ बेटा, आपको थाने ले जाया जाएगा।'

'मुझे थाने ले जाया जाएगा? लेकिन क्यों अंकल? मैंने तो इसकी मदद की थी।' पंकज ने थोड़ा-सा डर प्रकट करते हुए पूछा।

'आपको थाने में क्यों जाना पड़ेगा। यह तो वहीं पर जाकर ही पता चलेगा। साथ ही आपके परिवारवालों को भी बुलाया जाएगा।' पुलिस कर्मचारी ने कहा। यह बात सुनकर एक बार तो पंकज को लगा

जैसे उसके पाँवों से जमीन खिसकती जा रही हो।

शाम को थाने में पंकज को बुलाया गया। घर में घुसर-फुसर होने लगी। थाने की बात सुनते ही साजन की तो सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। उसने पंकज पर व्यंग्य कसा। 'क्यों, क्या बोला था मैंने? अब लेना मजा। मैंने तुझे आँखों-आँखों से कितना समझाया था लेकिन तुमने मेरी एक नहीं मानी। तुझ पर तो परोपकार का भूत सवार था। अब देना थाने में गवाही। साथ ही मम्मी-पापा को भी जलील करवाना।'

शाम को रेणुका को अस्पताल से छुट्टी मिल गई थी। अब वह ठीक महसूस कर रही थी। पंकज को अपने मम्मी-पापा के साथ थाने बुलाया गया। साथ ही रेणुका के पापा भी थे। इंस्पेक्टर साहब थाने में मौजूद थे। सभी लोग कुर्सियों पर बैठ गए।

इंस्पेक्टर ने पंकज को गौर से निहारा और उसकी तरफ एक पैकेट और लिफाफा बढ़ाते हुए बोले– 'शाबाश बेटा, तो तुम हो वह दिलेर और समझदार बालक जिसने न केवल अपराधियों के स्कूटर का नंबर नोट करके उन्हें पकड़वाने में हमारी मदद की है बल्कि उचित समय पर उस लड़की को अस्पताल में दाखिल करवाकर उसे बड़े जोखिम से बचाया है। कमाल के बालक निकले तुम तो। ये लो पुलिस की तरफ से आपका पुरस्कार और पांच सौ रुपये।'

'क्या सर पुरस्कार?' पंकज का मुँह खुला रह गया।

इंस्पेक्टर साहब ने बर्फी वाली प्लेट पंकज के आगे करते हुए कहा– 'हाँ, हाँ बेटा।' अब पहले वाली बात नहीं रही कि जब कोई किसी जख्मी व्यक्ति को अस्पताल में दाखिल करवाने की हिम्मत जुटाता था तो पुलिस खामख्वाह उसकी गवाही लेकर उसे परेशान करती थी। अब नये नियम बन गए हैं। जो किसी जख्मी को फौरन अस्पताल में दाखिल करवाकर उसकी उचित समय पर मदद करेगा पुलिस उसका सम्मान करेगी। जैसे आपका हो रहा है। ऐसा नेक कार्य करने वालों को बार-बार थाने में नहीं बुलाया जाएगा। आपको यह भी बताना चाहता हूँ कि दोनों स्कूटर सवार शहर के एक कॉलेज में पढ़ते हैं। उन्हें पकड़ लिया गया है।'

'बिल्कुल ठीक है साहब। धूल उछालने (फेंकने) से सूरज नहीं छिपता। गुणी व्यक्ति का गुण अपने आप प्रकट हो जाता है। पंकज जैसे परोपकारी लोगों का पब्लिक को भी सम्मान करना चाहिए। यदि यह उचित समय पर मेरी बेटी को अस्पताल न पहुँचाता तो न जाने उसका कितना खून बह चुका होता।' रेणुका के पापा ने पंकज की पीठ पर हाथ रखते हुए कहा।

जब पंकज अपने मम्मी-पापा सहित घर आया तो साजन उसे टी.वी. के आगे बैठा दिखाई दिया। जब उसे असलियत का पता चला तो शर्म से पानी पानी हो गया। उसमें पंकज का सामना करने की हिम्मत नहीं थी।

दो बाल कविताएं : कीर्ति श्रीवास्तव

बगिया मेरी सबसे प्यारी

बगिया मेरी सबसे प्यारी।
दिखती है ये सबसे न्यारी।
भांति-भांति के फूल खिले हैं,
रंग-बिरंगी छटा निराली।

गुलाब होता काँटो से घिरा।
पर दिखता वो सबसे भला।
संग काँटों के रहने पर भी,
खुश करता सबको वो सदा।

प्रेम भरे जीवन में सबके।
लगे सुंदर खिले जब वो क्यारी।
गैंदे की भी बात अलग है,
बासंति और लाल रंग है।

छोटे या बड़े होते हैं।
अर्पित चरणों में होते हैं।
सबको लगती महक सुहानी,
फूल सदा खुशियां देते हैं।

पेड़ लगाओ

प्यारे बच्चों पेड़ लगाओ।
हरियाली संग देश सजाओ।
पेड़ से होते बहुत फायदे,
सबको ये बतलाते आओ।

पेड़ न होंगे जो धरती पर।
पानी को तरसेंगे हम सब।
फसलें कैसे उग पायेंगी,
कैसे आगे बढ़ पाओगे तुम।

जब पेड़ों की छाया पाते।
तब थोड़ा-सा हम सुस्ताते।
सबके ही ये काम हैं आते,
छतरी भी तुम इसको बनाओ।

पेड़ लगाने का कर लो अनुबंध,
कभी न तोड़ेंगे इनसे संबंध।
देश में हरियाली लाओगे,
शपथ आज तुम ये खाओ।

पढ़ो और हँसो

एक बार एक पत्नी अपने पति को खाना खिला रही थी तभी पत्नी अपने पति से बोली– हमारी पड़ोसन बहुत खराब है।

पति : वह कैसे?

पत्नी : जब उसका पति खाना खाने बैठता है तो उसके सामने बैठकर रोटी गिनती है।

पति : यह तो बहुत खराब आदत है।

पत्नी : देखो, मैं आपके सामने बैठी हूँ। आपने 9 रोटियां खा लीं और दसवीं खा रहे हैं पर मैंने गिनी तो नहीं।

दरोगा : (चौकीदार से) जब चोर भाग रहा था तो तुम क्या कर रहे थे? तुम चाहते तो उसे पकड़ सकते थे।

चौकीदार : जी, एक हाथ से सीटी बजा रहा था और दूसरे हाथ से आँखें मसल रहा था।

शिक्षक : (विक्की से) बताओ, हिमालय कहाँ पर है?

विक्की : जी, नहीं मालूम।

शिक्षक : सीट पर खड़े हो जाओ।

विक्की : (सीट पर खड़े होकर) सर, अब भी नहीं दिख रहा।

– सुशान्त (मोतीहारी)

माँ : (राजू से) तुम फिर उस बदमाश लड़के से लड़ाई कर ली। पहले ही तुम अपना एक दांत गंवा चुके हो।

राजू : माँ, मैंने वह दांत गंवाया नहीं है, वह तो अभी भी मेरी मुट्ठी में है।

–मुझे लखपति बनाने का सारा श्रेय मेरी पत्नी को है।

–अच्छा! पहले आप क्या थे?

–करोड़पति।

सेठ : (नौकर से) अरे रामू इधर आ, मैं तुझे नौकरी से बाहर निकालता हूँ।

नौकर : (सेठ से) मैंने तो कुछ किया ही नहीं फिर आप मुझे नौकरी से क्यों निकाल रहे हो?

सेठ : तुम कुछ नहीं करते इसिलिए तो मैं तुम्हें नौकरी से निकाल रहा हूँ।

शिक्षक : (मोंटू के पिताजी से) आपका लड़का क्लास में सबसे कमजोर है।

मोंटू के पिता : लेकिन सर! भगवान की दया से घर में दो-दो भैंस हैं, दूध-घी की घर में कोई कमी नहीं है फिर भी न जाने क्यों कमजोर है।

– आशीष खुराना (सार्दुलशहर)

एक ड्राइवर को तेज रफ्तार से बस चलाते देख ट्रैफिक पुलिसमैन ने रोका और डायरी निकालकर ड्राइवर से पूछा– आपका नाम?

ड्राइवर : मेरा नाम है– कपालामात चंद्रा तसकल कातरजीमयू नाकु दा ...

पुलिसमैन ने बीच में टोकते हुए कहा– बस-बस जाओ। आइंदा इतनी तेज गाड़ी मत चलाना।

एक उम्मीदवार ने परिचित वोटर के घर जाकर कहा– भैया जरा ख्याल रखना, मैं खड़ा हूँ।

वोटर ने एक खाली कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा– आप खड़े क्यों हैं, बैठिये न।

एक सज्जन जैसे-तैसे तालाब से बाहर निकले और सामने खड़े मित्र पर गुस्सा होने लगे– तू तो कहता था तालाब में केवल कमर तक पानी होगा। यह तो बहुत गहरा है, मैं तो डूबते-डूबते बचा।

मित्र ने कहा– मुझे तालाब के पानी की गहराई का क्या पता? मैंने तो उसमें बतख को तैरते देखकर अन्दाजा लगाया था।

दो मूर्ख किसी तानाशाह का तख्ता पलटने का समाचार सुन रहे थे। एक बोला– जब उन्हें पता है कि उनका तख्ता पलटने वाला है तो वे अपने तख्ते को अच्छी तरह से फैवीकोल लगाकर फिक्स क्यों नहीं करवा लेते। – गुरमीत सिंह टूटेजा (इन्दौर)

एक दोस्त दूसरे से– तुम बहुत अच्छी स्विमिंग कर लेते हो कहाँ सीखी?

दूसरा दोस्त – पानी में।

मास्टर जी : नीम हकीम खतरा-ए-जान का क्या अर्थ होता है?

चिम्पू : इसका मतलब यह है कि हे हकीम, तुम नीम के पेड़ पर मत चढ़ो, तुम्हारी जान को खतरा है।

सिक्योरिटी गार्ड से नौकरी के लिए पूछा गया कि अंग्रेजी आती है?

गार्ड बोला– क्यों सर! चोर इंग्लैंड से आएंगे क्या?

कबाड़ी की दुकान पर एक संगीतकार ने अपनी वायलिन दिखाते हुए पूछा– क्या दोगे?

कबाड़ी : इस टूटे-फूटे वायलिन का दस रुपया दूंगा।

संगीतकार : बस दस रुपये? इसे बजाना बन्द करने के लिए पचास रुपये तो मेरे पड़ोसी दे रहे थे। -रीटा, दिल्ली

प्रेरक-प्रसंग : अर्जुन क्वात्रा

माँ के तीन अनोखे गहने

उन्नीसवीं शताब्दी का अंतिम समय था। ठाकुरदास नामक एक व्यक्ति कोलकाता में रहता था। उसके परिवार में केवल एक बच्चा और पत्नी थी। इस सीमित परिवार का भरण-पोषण भी ठीक प्रकार से न हो पाता था।

नियति ने उन्हें मेदिनीपुर जिले के एक गाँव में ला पटका। वहाँ ठाकुरदास को दो रुपये माहवार की नौकरी मिली। कालांतर में उनका देहांत हो गया। पत्नी के कंधों पर सारे परिवार का दायित्व आ गया। इसी तरह कई वर्ष बीत गये।

एक दिन रात के समय बेटे ने अपनी माँ के पैर दबाते हुए पूछा– 'माँ! मेरी इच्छा है कि मैं पढ़-लिखकर बहुत बड़ा विद्वान बनूं और तुम्हारी खूब सेवा करूं।'

बच्चा उम्र में छोटा ही था। इसलिए कुछ मन बहलाते हुए प्रोत्साहन के स्वरों में माँ ने पूछा।– 'कैसी सेवा करेगा बेटा?'

'माँ तुमने बड़ी तकलीफ में दिन गुजारे हैं। मैं तुम्हें अच्छा-अच्छा खाना खिलाऊंगा और तुम्हारे लिए बढ़िया कपड़े लाऊंगा। हाँ तुम्हारे लिए गहने भी बनवाऊंगा।'

माँ बोली– हाँ बेटा, तू जरूर सेवा करेगा मेरी। पर गहने मेरी पसंद के ही बनवाना।

'कौन से गहने माँ?'

'मुझे तीन गहनों की बड़ी चाह है।' माँ ने बताया।– 'पहला गहना तो यह है कि इस गाँव में कोई अच्छा स्कूल नहीं है। तुम एक स्कूल बनवाना, दूसरा गहना दवाखाना भी खुलवाना और तीसरा गहना यह है कि गरीब बच्चों के रहने, खाने तथा शिक्षा प्राप्त करने की व्यवस्था करना।'

बेटे ने भवाभिभूत होकर माँ के चरणों में सिर रख दिया और तभी से उसे कुछ ऐसी धुन सवार हुई कि उसे अपनी माँ के इन तीन गहनों का सदैव ध्यान रहा। वह बराबर स्कूल, औषधालय तथा सहायता केन्द्र खोलता चला गया।

आगे चलकर स्त्री शिक्षा तथा विधवाश्रम रूपी गहने भी अपनी माँ को चढ़ाए। यह महामानव और कोई नहीं, पं. ईश्वरचंद्र विद्यासागर ही थे।

बुद्धि की परख

उत्तर : एक जानवर ने 3 जानवरों को, 2 ने 1 को,
3 ने 4 को और 4 जानवर जानवर ने 3
जानवर को मुखौटा पहन रखा है।

प्रेरक-प्रसंग : ऋषिमोहन श्रीवास्तव

पैसों की बर्बादी पसन्द नहीं

एक बार भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद कई राज्यों का दौरा करते हुए रांची पहुँचे। एक दिन उनके पैरों में काफी दर्द होने लगा। मालूम हुआ कि उनके जूतों के तले काफी घिस गये हैं और उनमें लगीं कीलें कभी-कभी उनके पैरों में लगती थीं।

जहाँ राष्ट्रपति का शिविर लगा हुआ था, वहीं पास में एक किलोमीटर दूर 'अहिंसक चर्मालय' केन्द्र बना था। राष्ट्रपति के सचिव फौरन वहाँ गये और एक जोड़ी जूता खरीद लाए। जूते पहनते समय डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने जूते की कीमत पूछी तो उन्होंने बताया– 'उन्नीस रुपये।'

थोड़ा सोचते हुए राजेन्द्र प्रसाद बोले– लेकिन पिछले वर्ष ऐसे ही जूते ग्यारह रुपये में खरीदे थे।

सचिव बोले– जी हाँ, जूते ग्यारह रुपये वाले भी थे किन्तु वे कुछ कमजोर थे और फिर ये जूते मुलायम चमड़े के हैं।

राजेन्द्र प्रसाद जी सन्तुष्ट नहीं हुए। वे बोले– जब ग्यारह रुपये वाले जूते से काम चल सकता है तो फिर उन्नीस रुपये क्यों खर्च किए जाएं? और फिर तुम जानते हो कि मेरे पैर चमड़े के जूते पहनने के आदी बन गये हैं। अतः तुम्हें ये जूते वापिस लौटा आने चाहिएं। लेकिन तुम जाओगे किस प्रकार?

सचिव बोला– मोटरगाड़ी से।

लेकिन यह तो बिल्कुल ही ठीक नहीं है। जितने रुपये के जूते खरीदोगे, उतने रुपये तो पेट्रोल में चले जाएंगे। इसलिए ये जूते अभी यहीं रखे रहने दो। हम लोगों को यहाँ तीन दिन रूकना है। इन तीन दिनों में कोई आता-जाता दिखलाई देगा तो इन जूते को बदलवा लेंगे।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को पैसों की जरा-सी भी बर्बादी पसन्द नहीं थी।

प्रेरक-प्रसंग : राधेलाल 'नवचक्र'

छाता, माथा और पेड़

जेठ की दुपहरिया थी। धूप काफी तीखी हो चली थी। एक किसान छाता लेकर किसी काम से घर से बाहर निकला। रास्ते में छाता ने किसान के माथा को छेड़ा– यह तो मैं ही हूँ जो तुम्हें सूरज की तीखी किरणों से बचा रहा हूँ। तुम्हारे लिए मैं सारी गर्मी सह लेता हूँ।

माथा क्षणभर चुप रहा। फिर बोला– मेरे लिए तुमने जो कष्ट सहा है, उसके लिए धन्यवाद। मगर एक बात कहूं।

'हाँ, हाँ कहो न।' छाता उत्सुक हो उठा।

'अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो परोपकार की यह बात कभी मुँह से बाहर नहीं निकालता।' माथा ने कहा।

तभी एक छायादार पेड़ के नीचे छाता बन्द कर किसान आराम करने के लिए ठहरा।

माथा ने फिर कहा– छाता भाई, वर्षों से यह पेड़ राहगीरों और पशु-पक्षियों को छाया देकर सूरज की भीषण गर्मी से बचाता आ रहा है, है न?

'बिल्कुल,' छाता ने कबूल की।

'मगर यह कहो, आज तक इसने कभी किसी पर अपना एहसान जताया हो, तुमने सुना है?'

'नहीं तो।' छाता के मुख से स्वतः निकल पड़ा।

'फिर तुम इस पेड़ से क्यों नहीं कुछ सीखते?' कहकर माथा चुप हो गया।

सितम्बर अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 **सेफाली गौतम** 14 वर्ष
गाँव : सुरैला, पोस्ट : परसरामपुर,
जिला : बस्ती (उ.प्र.)

2 **परी गुप्ता** 10 वर्ष
27, कटरा साहब खान,
इटावा (उ.प्र.)

3 **गुरुप्रीति** 12 वर्ष
शिवराम पार्क, नांगलोई,
दिल्ली

4 **भारती सोनी** 14 वर्ष
दीपक किराना भण्डार, लाखे नगर,
अश्वनी नगर, रायपुर (छत्तीसगढ़)

5 **खुशी वधवा** 10 वर्ष
अशोक विहार कालोनी, नकोदर,
जालंधर (पंजाब)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

अलका, अभिजीत (चन्दौली), समीप (सुरैला), ऐश्वर्या (देहरादून), चेतन (पिण्डवाड़ा), स्वर्णजीत (फगवाड़ा), नवदिशा (लोकपुरम, दिल्ली), मन्नत (मालनू), अशित (बिलासपुर), यशनूर सिंह (सिहाली), नम्रता (बुढलाडा), आर्यमन (सेक्टर-12, पंचकुला), पूनम (कानपुर), अंशुमन (रतिया), पीयूष (बिन्नागुड़ी), कनिका (रोहतक), मिश्टी (रायपुर), मानवी (लहरागागा), अंबर (वसुंधरा इंक्लेव, दिल्ली), रचना (प्रेमनगर), राहुल (बुढ़ार), अनिरुद्ध (सरस्वती विहार, देहरादून), सुजाता (पंजाला), जैयाना (अमृतसर), गोविंद (जालंधर कैंट), नवदीश (लुधियाना), साहिल, यशिका, ओम, कृष्णा, दक्ष, आयशा, परी, आरती, कुश, नंदनी, भावेश, चिराग, जय, कार्तिक, हार्दिक, हर्षिता, हर्ष, देवांग, सुमित, निशिका, मोहित, शिव, सिमरन (गोधरा), संजना, राकेश, रेशमा, साहिल, आकृत, मीत, खुशबू, प्रियांशा, कनिका, अनिशा, (रायपुर)।

नवम्बर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 20 नवम्बर तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) जनवरी-2020 अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मैं और मेरे घर वाले इसका बेसब्री से इंतजार करते हैं। हम इस पत्रिका को बड़े चाव से पढ़ते हैं। हमें सितम्बर माह की पत्रिका प्राप्त हुई इसमें हमने पढ़ा 'शिक्षा को आचरण में लाएं', 'मर गया सांप', 'चन्द्रयान की चमक', 'सम्पूर्ण अवतार बाणी' आदि और भी बहुत सारी कहानी और कविताएं पढ़ी।

हम इसके बारे में बस इतना कहेंगे कि यह पत्रिका बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए जरूरी है।

– वैभव पुण्डीर (डांगोली बांगर)

दास व दास के बच्चे सारे ही हँसती दुनिया के बहुत मतवाले हैं। सद्गुरु माता जी की कृपा से हँसती दुनिया में अच्छे-अच्छे लेख व कहानियां, कविताएं हर माह पढ़ने व सुनने को मिलती है। यह सभी के मन को भाती और पुलकित करती है। इसमें प्रकाशित कहानियां प्रेरणादायक व शिक्षाप्रद होती हैं।

सितम्बर 2019 का अंक पढ़ा। सबसे अच्छा लेख 'नीम' लगा। मैं बचपन से नीम का दातुन करता हूँ और बच्चों को भी यही कहता हूँ।

– रानी जवाहर (निरंकारी कालोनी, दिल्ली)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। सितम्बर माह की हँसती दुनिया प्राप्त हुई। इसके सभी प्रेरक-प्रसंग शिक्षाप्रद हैं। कविताएं, लेख व कहानियां सभी पसन्द आए। विशेषकर 'भारत की गौरव धावक हिमादास' की उपलब्धि प्रेरणादायक है। 'ठगी महंगी पड़ी' तथा 'सफलता का रहस्य' कहानियां अच्छी लगीं।

– हरप्रीत सेठी (निरंकारी कालोनी, दिल्ली)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। सितम्बर महीने की पत्रिका प्राप्त हुई कहानी 'फैसला', में किस्मत और मेहनत पढ़कर मन पुलकित हो उठा।

बच्चों के लिए यह पत्रिका शिक्षाप्रद व अनमोल है।

– पूर्ण सिंह सैनी (राजनगर, दिल्ली)

हमारे अंकल हँसती दुनिया के नियमित सदस्य हैं और हम सबको पत्रिका का बेसब्री से इन्तजार रहता है। मैं और मेरा छोटा भाई इसे बड़े आनन्द के साथ पढ़ते रहते हैं। पत्रिका से हमें जानकारीपूर्ण एवं ज्ञानवर्द्धक लेख तथा ज्ञान भरी प्यारी-प्यारी जानकारियां व ढेर सारे प्रेरक-प्रसंग एवं शिक्षाप्रद कहानियां पढ़ने को मिलती हैं।

इसके अलावा बाल कविताएं भी शिक्षाप्रद होती हैं।

– विनोद व जय बिल्दानी (बड़नेरा)

हमें हँसती दुनिया बहुत पसन्द है। इसका हमें हर महीने ही बेसब्री से इन्तजार रहता है। यह हमारे ज्ञान में वृद्धि के अलावा हमारा मनोरंजन भी करती है। हम इसे स्वयं पढ़कर फिर कहानियां, कविताएं एवं चुटकुले अपने दोस्तों को भी सुनाते हैं।

हमने हँसती दुनिया के लिए अपने दिल की भावना एक कविता के रूप में भी प्रस्तुत है–

बच्चों के दिल को लुभाती है हँसती दुनिया।
सबका मनोरंजन भी करती है हँसती दुनिया।
सबको हँसाती भी है हँसती दुनिया।
ज्ञान भी बढाती है हँसती दुनिया।
हर तरह से अच्छी है हँसती दुनिया।
तभी तो हमें पसन्द है हँसती दुनिया।
पढ़ते ही दिल में बस जाती है हँसती दुनिया।
किताब ही नहीं एक अनमोल खजाना है हँसती दुनिया।
बनी रहे ये सदा हमारे बीच बनके हँसती दुनिया।

– ज्योति, नीलम व देवेन्द्र शर्मा (हनुमानगढ़)

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

SANT NIRANKARI MISSION

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : : :

Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009
Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph 22-24102047

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)